कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक

संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य

सत्यपाल

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887
पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

आवरण कथा : कर्नाटक विधानसभा चुनाव 2013
एक रिपोर्ट..... 7

दिल्ली : गुड़िया रेप
भाजपा का संसद तक विरोध मार्च..... 9

लेख
श्वेत पत्र के बाद भी विदेश से काला धन नहीं आया
–लालकृष्ण आडवाणी..... 17
मेरा कॉल डिटेल रिकॉर्ड्स और एक नागरिक की गोपनीयता का अधिकार
– अरुण जेटली..... 18
यूरोपीय संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौता – विनाश का प्रतीक
–डॉ. मुरली मनोहर जोशी..... 20
कांग्रेस का वंशवादी अभिमान
–बलबीर पुंज..... 23
संप्रग शासन में बढ़ती महंगाई
–राजनाथ सिंह सूर्य..... 25

अन्य
डॉ. अम्बेडकर जयंती पर सहभोज..... 6
फिक्की में श्री नरेन्द्र मोदी का भाषण..... 12
राजस्थान : सुराज संकल्प यात्रा..... 27
हिमाचल प्रदेश : भाजपा कार्यसमिति की बैठक..... 30

मुख पृष्ठ : *कर्नाटक विधानसभा चुनाव 2013 के निमित्त घोषणा-पत्र जारी करते भाजपा नेतागण*

1967 में भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष बनने पर कालीकट स्टेशन पर पं. दीनदयाल उपाध्याय का भव्य स्वागत

बोध कथा

कहीं देखा है ऐसा राष्ट्र प्रेम!

हमारे देश भारत को धर्मभूमि माना जाता है। यह ऐसी भूमि है, जहां राम और कृष्ण जैसे भगवान अवतरित हुए और मानव-कल्याण के कार्यों को आगे बढ़ाया। इस भारत भूमि से विदेशी भी खूब प्यार करते रहे हैं।

इसी से जुड़ा एक प्रसंग प्रसिद्ध भाषावेत्ता आचार्य रघुवीर का है। एक बार वह इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्ण के आमंत्रण पर 1951 में जकार्ता गए। वहां के राष्ट्रपति भवन में आचार्य जी के सम्मान में महाभारत का मंचन किया गया। राष्ट्रपति सुकर्ण ने आचार्य जी से कहा, हम मजहब से भले ही मुसलमान हैं, किंतु रामायण-महाभारत के पात्र हमारे देश की जनता के प्रेरणास्रोत रहे हैं। मेरे पिता दानवीर कर्ण के चरित्र से प्रभावित थे। इसलिए उन्होंने मेरा नाम कर्ण रखा। बाद में उसमें 'सु' अर्थात 'अच्छा' शब्द जोड़ दिया तथा मेरा नाम सुकर्ण हो गया। आचार्य रघुवीर एक मुस्लिम राष्ट्रपति की महाभारत तथा रामायण के पात्रों के प्रति अगाध श्रद्धा-भावना देखकर अभिभूत हो उठे। इंडोनेशिया के विभिन्न स्थानों पर स्थित शिव, ब्रह्मा तथा विष्णु के मंदिरों की जानकारी देते हुए राष्ट्रपति सुकर्ण ने बताया, बाली, सुमात्रा आदि की यात्रा करते समय आपको लगेगा कि आप भारत में ही भ्रमण कर रहे हैं।

आचार्य रघुवीर ने वहां की मिट्टी को सिर से लगाया तथा बोले, वास्तव में मैं आपके देश में अपने महान भारत देश के ही दर्शन कर कृतकृत्य हो उठा हूं।

-शिवकुमार गोयल

(अमर उजाला से साभार)

व्यंग्य चित्र

रेप जैसी सामाजिक बुराई को खत्म करना जरूरी

समाचार

रेप! रेप!! रेप!!! समाचार-पत्र, चैनल्स, सदन, सड़क, परिवारों में, संस्थाओं में- एक ही चर्चा। बावजूद इसके सरकार पर कोई असर नहीं। गृहमंत्री का ठलुआई भरा बयान पुलिसिया अंदाज में दे दिया जाता है। हंसना मनुष्य की प्रकृति है। अनावश्यक हंसना विकृति है। राज्यसभा में जब कांग्रेस की डॉ. प्रभा ठाकुर बिलख-बिलखकर दिल्ली में घटित दरिंदगी भरी घटना पर रो रही थीं तो राज्यसभा चैनल का कैमरा भारत के गृहमंत्री का, उसी दौरान मुस्कुराता हुआ चेहरा दिखा रहा था। रेप की घटना के बाद शर्म आनी चाहिए। मुस्कुराना नहीं चाहिए। गृहमंत्री की कुटिल मुस्कान भारत का उपहास है। भारत की महिला का उपहास है। संवेदनशीलता का उपहास है। संवेदनाओं की अंत्येष्टि है। जो लोग गौर से राज्यसभा चैनल देखते हैं उनमें से किसी को भी गृहमंत्री की यह कुटिल मुस्कान नागवार गुजरी होगी।

हम कैसे हो गए हैं? क्या हम पूर्व में ऐसे थे? घटनाओं ने यदि मर्यादा तोड़ी हैं तो घटनाओं के बाद हम भी मर्यादा तोड़ने लगे हैं। देश की गूंज को गृहमंत्री नहीं समझ पाए। ऐसे गूंगे-बहरे गृहमंत्री को एक क्षण भी कुर्सी पर रहने का अधिकार नहीं है। वैसे तो वे जबसे गृहमंत्री बने हैं, गृहमंत्रालय की कुंडली अपराधों से भरी कुंडली हो गई है। दिल्ली में सितंबर 2008 में बम धमाके हुए थे। और उस घटना को देखने भारत के तत्कालीन गृहमंत्री शिवराज पाटिल जितनी बार पहुंचे उतनी बार उन्होंने अपने सूट बदले थे। स्थिति यह बनी थी कि उनकी इस असंवेदनशीलता पर उन्हें अपनी कुर्सी खोनी पड़ी थी। काश! इससे वर्तमान गृह मंत्री कुछ सबक लेते और संवेदनशीलता ग्राह्य करते।

विकृत मानसिकता पर विराम लगाने के लिए जहां कानून का डर होना आवश्यक है वहीं मानसिकता विकृत न हो, इसके लिए जन-जागरण करना भी अनिवार्य सा ही लगता है। जब भारतीय जनता पार्टी शैक्षिक पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्यों के समावेश करने की मांग करती है तो उसे यह कहकर कि आरएसएस का एजेंडा है, यूपीए सरकार रिजेक्ट कर देती है। जितनी नैतिकता भरा वातावरण होगा उतनी ही राष्ट्रीयता मजबूत होगी। जीवन मूल्य और नैतिक मूल्यों का अध्ययन आज की पीढ़ी के लिए महती आवश्यकता है। हो सकता है कि नैतिक शिक्षा के बाद उस युवा को कुछ समय तक बेरोजगार रहना पड़े, पर कम से कम वह बलात्कार से नहीं जुड़ेगा। विकृत मानसिकता के करीब नहीं जाएगा। सरकार को इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि हमें इस देश में क्या पढ़ाना है और क्या दिखाना है? पढ़ाने और दिखाने के नाम पर देश में जिस तरह से सभी को छूट है, वह लोकतंत्र के लिए खतरनाक है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं है कि हमें चाहे जो बोलने का अधिकार दिया गया हो। इसी तरह जीने की स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं है कि हम चाहे जैसे जिएं? क्योंकि हम सभ्य समाज में रहते हैं इसलिए यह तो विचार करना ही पड़ेगा कि समाज क्या चाहता है? समाज के मनमानस के विरुद्ध जब कोई कार्य होता है तो हम उसे ही असामाजिक कार्य कहते हैं। मीडिया को भी सावधानी बरतना होगा। सामाजिक कार्यों को अधिक दिखाना होगा। और असामाजिक कार्यों को दिखाने में संयमता बरतना होगा। भारतीय मीडिया को आज आत्मसंयमता की भारी आवश्यकता है। सुघटना को किस ऊंचाई तक ले जाना और दुर्घटना को किस गहराई तक दिखाना, यह मानदंड तो मीडिया को स्वयं तय करना होगा।

बाबा साहेब की मंशा समझ नहीं पाई कांग्रेस : राजनाथ सिंह

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कांग्रेस पार्टी पर दलित समाज का इस्तेमाल वोट बैंक के रूप में करने आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस कभी बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर की मंशा नहीं समझ पाई। यही वजह है कि आर्थिक व सामाजिक समानता वाले जिस भारत का अंबेडकर ने सपना देखा था, उसे साकार करने की बजाय उनके नाम पर राजनीति कर रही है। जब तक देश में मौजूद आर्थिक व सामाजिक विषमता दूर नहीं होगी तब तक भारत को सशक्त नहीं बनाया जा सकता है और कांग्रेस पार्टी अपने 54 वर्षों के शासन काल में इस कमी को दूर नहीं कर सकी। श्री राजनाथ सिंह डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती के मौके पर प्रदेश भाजपा द्वारा डॉ. अम्बेडकर जयंती पर 14 अप्रैल को बुराड़ी मैदान में आयोजित दलित सम्मान व सहभोज कार्यक्रम में बोल रहे थे। इस मौके पर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष श्रीमती सुषमा स्वराज ने भी कांग्रेस पर जमकर हल्ला बोला और सत्ता में आने पर दलितों के हित में अनेक कल्याणकारी योजनाएं बनाने की भी घोषणा की। उन्होंने कहा कि दलित समाज के लोगों ने छूआछूत के दंश को झेल कर भी अपने धर्म को अपनाए रखा, इसके लिए भाजपा उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

इस मौके पर दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री विजय गोयल ने दलित समाज के बच्चों के लिए मुफ्त किताब-कापियां देने की घोषणा की। साथ ही दिल्ली की सत्ता में आने पर बिजली की दरों में 30 फीसद कमी करने का एलान करते हुए उन्होंने शीला सरकार को उखाड़ फेंकने का भी आहवान किया। सभा को भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बलवीर पुंज, अनुसूचित मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय पासवान, राज्यसभा में पार्टी के उपनेता श्री रविशंकर प्रसाद, श्री कलराज मिश्र आदि नेताओं ने भी संबोधित किया। इस मौके पर कार्यक्रम के संयोजक योगेंद्र चंदोलिया, बाहरी दिल्ली अध्यक्ष विनय रावत, क्षेत्रीय विधायक श्री.ष्ण त्यागी, पार्षद राजपाल राणा, उर्मिला राणा, योगेश कोली, मुकेश मान समेत पार्टी के सभी नेताओं ने सभा में आए लोगों के साथ पंक्ति में बैठकर भोजन किया। ■

पांच वर्षीय बालिका से हुई बलात्कार देश के लिए लज्जा का विषय है जो देश को लज्जित करता है, यह भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है। पहली बात, घटना न हो इसके लिए जनजागरण अभियान बहुत जरूरी है। अगर हो भी जाए, तो उसे खबरगोशी के साथ परोसना भी एक सामाजिक अपराध माना जाएगा। संसद सिर्फ कानून बनाए और चिंता व्यक्त करे। इतनाभर मात्र उचित नहीं है। केंद्र और राज्य सरकारों को चाहिए कि उनके निर्णय में सामूहिकता दिखे। निर्णय सकारात्मक और सुधारात्मक हो। कभी-कभी मीडिया ऐसा स्वरूप खड़ा कर देता है कि भारत में सिर्फ रेप ही रेप हो रहा है। शर्मनाक घटना को प्रस्तुत करने में भी मीडिया को अपनी मान्य मर्यादाओं को नहीं तोड़ना चाहिए। रेप पर किसी भी दल को राजनीति नहीं करना चाहिए। यह सामाजिक बुराई है और इस बुराई को हम सभी को खत्म करने की दिशा में पहल करनी चाहिए। ■

सिर्फ भाजपा ही दे सकती है सुशासन : राजनाथ सिंह

कर्नाटक में विधानसभा चुनाव 5 मई को होने हैं और 8 मई को वोटों की गिनती। राज्य की 224 सदस्यीय विधानसभा का कार्यकाल हालांकि तीन जून को समाप्त हो रहा है। इस चुनाव में मुख्य मुकाबला सत्तारूढ़ दल भाजपा और कांग्रेस के बीच है जबकि जनता दल (सेकुलर) एवं कर्नाटक जनता पार्टी (केजेपी) के उम्मीदवार भी चुनाव मैदान में किस्मत आजमा रहे हैं। चुनाव-प्रचार जोरों पर है।

कर्नाटक विधानसभा चुनाव अभियान का श्रीगणेश करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले में कांग्रेस की तरफ से पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का नाम घसीटे जाने पर आक्रोश व्यक्त किया। राज्य के विकास के लिए

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का विकास मॉडल पेश किया। कर्नाटक में तीन बार मुख्यमंत्री बदलने के लिए उन्होंने माफी भी मांगी और कहा कि येद्दयुरप्पा को भाजपा ने नहीं निकाला, हालात ऐसे बन गए थे।

स्पेक्ट्रम घोटाले की पड़ताल करने वाली संयुक्त संसदीय समिति की रिपोर्ट में अटलजी का नाम घसीटे जाने पर भाजपा ने कांग्रेस पर पलटवार किया। कर्नाटक विधानसभा के चुनाव अभियान की शुरुआत करते हुए श्री राजनाथ सिंह ने 21 अप्रैल को चितकोटी में कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगा जोरदार हमला बोला। जेपीसी रिपोर्ट में अटलजी पर कीचड़ उछालने का मुद्दा उठाकर उन्होंने कहा, 'वाजपेयी जैसी शख्सियत पर कीचड़ उछालने को देश बर्दाश्त नहीं करेगा।'

कन्नड़ में भाषण शुरू कर जनता की तालियां बटोरने के बाद भाजपा अध्यक्ष ने दावा किया कि भाजपा ही सुशासन दे सकती है। श्री नरेंद्र मोदी के विकास मॉडल का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा, यह हम नहीं सर्वेक्षण कह रहे हैं। खुद राजीव गांधी फाउंडेशन ने गुजरात सरकार की तारीफ की है। सुशासन की कसौटी पर भाजपा की सरकारें खरी उतर रही हैं। इस कड़ी में उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने भी इस बात को साबित किया है।

उन्होंने पांच साल में राज्य में तीन बार मुख्यमंत्री बदलने के लिए माफी मांगी। उन्होंने कहा, येद्दयुरप्पा को हम हटाना नहीं चाहते थे। लेकिन, लोकायुक्त ने उन पर आरोप लगाए थे। आरोपों पर तो हमारे वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी तक ने इस्तीफा दे दिया था। अब कर्नाटक में एक साल से जगदीश शेट्टार सरकार है, हम नहीं चाहते कि बार-बार कोई बदलाव हो।

भ्रष्टाचार पर समझौते का कोई सवाल नहीं : लालकृष्ण आडवाणी

भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने पार्टी नेताओं व कार्यकर्ताओं को आगाह किया कि संगठन में अनुशासनहीनता को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा और भ्रष्टाचार पर समझौते का कोई सवाल हीं नहीं उठता।

श्री आडवाणी ने 5 मई के विधानसभा चुनाव के लिये 21 अप्रैल को राणेबेन्नूर में आयोजित एक सार्वजनिक सभा में कहा, 'पार्टी में अनुशासनहीनता के प्रति शून्य सहिष्णुता, सरकार में भ्रष्टाचार के प्रति शून्य सहिष्णुता।' उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से कहा है कि अगर उन्हें कोई शिकायत है तो वे पार्टी के वरिष्ठ नेताओं से इसकी शिकायत कर सकते हैं। केंद्र में तीसरे मोर्चे की संभावना के संदर्भ में उन्होंने कहा,

'नई दिल्ली में भाजपा या कांग्रेस के समर्थन के बिना कोई सरकार नहीं बन सकती।'

भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी है यूपीए : सुषमा स्वराज

यूपीए सरकार पर करारा हमला बोलते हुए लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने बंगलूरू में 22 अप्रैल को कहा कि कांग्रेस की अगुवाई वाली सरकार भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी है और जब कभी यह अनियमितताओं के मुद्दे पर सवालों के घेरे में आती है, अपना दोष अपने सहयोगी दलों पर मढ़ देती है।

पांच मई को होने जा रहे कर्नाटक विधानसभा के चुनावों के सिलसिले में प्रचार के लिए पहुंची श्रीमती सुषमा स्वराज ने एक सभा को संबोधित करते हुए कहा, ''कांग्रेस सरकार का भ्रष्टाचार हवा, जमीन और पाताल तक है।'' श्रीमती स्वराज 2जी स्पेक्ट्रम, राष्ट्रमंडल खेलों और कोयले के ब्लॉकों के आवंटन में हुए कथित घोटाले का हवाला देते हुए ये बातें कर रही थीं। उन्होंने कहा, '' इस बार मैं कर्नाटक के लोगों को आश्वासन देना चाहूंगी कि पार्टी ने राज्य में शासन करते हुए काफी कुछ सीखा है और हम पिछली बातों को दोहराएंगे नहीं और साफ सुथरी तथा सफल सरकार देंगे। हमें आपके सहयोग की जरूरत है।''

भाजपा का घोषणापत्र जारी

मुफ्त लैपटॉप व एक रुपये किलो चावल देने का वादा

कर्नाटक विधानसभा चुनाव-2013 के लिए भाजपा ने 19 अप्रैल को जारी अपने घोषणापत्र में कई आवश्यक घोषणाएं की हैं। पार्टी ने स्नातक स्तर तक के छात्रों को मुफ्त लैपटॉप-टैबलेट और राज्य के सभी गरीब परिवारों को एक रुपये किलो के हिसाब से हर महीने 25 किलो चावल देने जैसे वादे किए हैं। राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने मुख्यमंत्री जगदीश शेट्टार, कर्नाटक के प्रभारी प्रहलाद जोशी, पार्टी महासचिव अनंत कुमार और अन्य नेताओं की उपस्थिति में चुनाव घोषणापत्र जारी किया। इसमें सभी के लिए शुद्ध पेयजल, चौबीसों घंटे बिजली की आपूर्ति, कन्नड़ माध्यम के स्कूलों में अंग्रेजी भाषा सिखाने के लिए विशेष प्रोजेक्ट, नौकरी व शिक्षा में कन्नड़ छात्रों को प्राथमिकता और सभी स्कूल कॉलेजों में वाई-फाई व इंटरनेट की सुविधा मुहैया कराने के वादे किए गए हैं। स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए 50 फीसद सीटें आरक्षित करने और स्कूल-कॉलेजों के पाठ्यक्रम में योग को शामिल करने की बात भी कही गई है। श्री अरुण जेटली ने कहा कि चावल और मुफ्त लैपटॉप देने की घोषणा को सिर्फ लोक-लुभावन घोषणा के दायरे में रखकर नहीं देखना चाहिए। गरीब परिवारों को रियायती दर पर चावल मुहैया कराने से 'जीने का अधिकार' की संकल्पना और भी अर्थपूर्ण हो जाएगी। ■

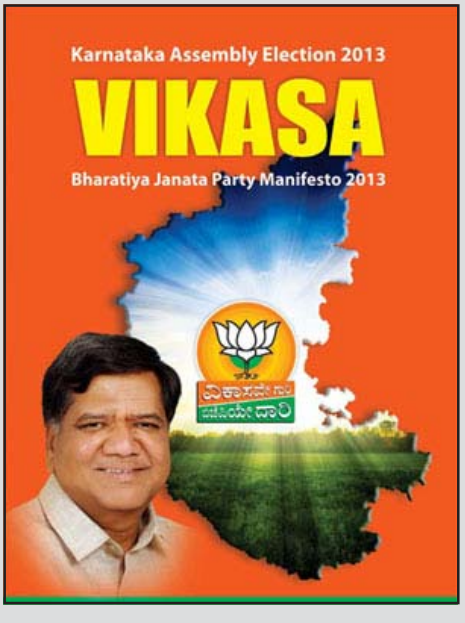

भाजपा का संसद तक विरोध मार्च

दिल्ली में लड़कियां सुरक्षित नहीं हैं। यहां दुष्कर्म की घटनाएं थम नहीं रही हैं। देश की राजधानी में इस साल एक जनवरी से लेकर 15 फरवरी तक दुष्कर्म के 181 मामले सामने आए हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक राजधानी में हर रोज औसतन चार महिलाएं दुष्कर्म की शिकार हो रही हैं। महज चार महीने पहले दिल्ली में 16 दिसंबर को हुए सामूहिक बलात्कार कांड ने पूरे देश को प्रचंड आक्रोश फैला दिया था। अब राष्ट्रीय राजधानी में पांच वर्षीय बच्ची से बलात्कार की घटना ने फिर से लोगों के मन में आक्रोश भर दिया है। इस घटना के विरोध में सड़क से लेकर संसद तक विरोध प्रदर्शन जारी है। एक स्वर से सभी ने बलात्कार के दोषी को फांसी देने की मांग की है। भारतीय जनता पार्टी, दिल्ली प्रदेश की महिला एवं युवा मोर्चा दिल्ली की कांग्रेस सरकार के खिलाफ लगातार विरोध प्रदर्शन आयोजित कर रहे हैं।

गत 22 अप्रैल को भाजपा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री विजय गोयल के नेतृत्व में लगभग 3000 कार्यकर्ताओं ने दिल्ली में पांच साल की गुड़िया के बर्बर बलात्कार का विरोध करने के लिए संसद भवन तक मार्च किया। भाजपा कार्यकर्ताओं ने महिलाओं को सुरक्षा देने में सरकार की विफलता के विरोध स्वरूप अपने मुंह पर काले फीते बांध रखे थे और अपने सर पर काली टोपी पहन रखी थी। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए श्री विजय गोयल ने कहा कि पुलिस आयुक्त, दिल्ली की मुख्यमंत्री के परामर्श से गृह मंत्री द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। अत: उनका और उनके पुत्र द्वारा बार-बार यह कहना कि पुलिस आयुक्त को हटाया जाना चाहिए केवल एक दिखावा है। इसमें कोई तथ्य नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि शीला दीक्षित और गृह मंत्री दोनों ही पुलिस आयुक्त को हटाना चाहते हैं तो उन्हें कौन रोक रहा है?

श्री गोयल ने आगे कहा कि अपनी गलतियों के लिए दूसरे व्यक्तियों को जिम्मेदार ठहराना कांग्रेस पार्टी की पुरानी आदत रही है। 2जी घोटाले के लिए ए. राजा को बलि का बकरा बनाया गया। राष्ट्रमंडल खेल में हुए घोटालों के लिए सुरेश कलमाड़ी को जिम्मेदार ठहराया और अब कांग्रेस दिल्ली की बिगड़ती कानून व्यवस्था, विशेषत: महिलाओं की सुरक्षा के मुद्दे पर पुलिस आयुक्त को जिम्मेदार ठहराने का प्रयास कर रही है। श्री गोयल ने यह पूछा कि क्या यह सही प्रजातांत्रिक व्यवस्था है जिसमें केवल नौकरशाहों को ही जिम्मेदार ठहराया जाता है जबकि उनके ऊपर बैठे राजनेता जिम्मेदार नहीं माने जाते। क्या मुख्यमंत्री जैसे उच्च निर्वाचित पद पर आसीन व्यक्ति अपनी गलतियों के लिए अन्य लोगों को जिम्मेदार ठहराकर बच सकती है? श्री गोयल ने कहा कि दिल्ली में अभी जंगल राज जैसी स्थिति है और इसे तुरंत सुधारकर जनता को राहत पहुंचाई जानी चाहिए। श्री गोयल को कार्यकर्ताओं के साथ संसद के द्वार पर रोक लिया गया और उन पर लाठियां बरसाई गई तथा गिरतार किया गया। इस विरोध मार्च में विधायक प्रो. जगदीश मुखी, श्री रमेश विधूड़ी, पार्षद श्री सुभाष आर्य और भाजपा उपाध्यक्ष श्री पवन शर्मा सम्मिलित थे।

भाजपा महिला मोर्चा का 10 जनपथ पर प्रदर्शन

गुड़िया से दुष्कर्म मामले को लेकर दिल्ली के लोगों का गुस्सा अब सड़कों पर उबाल ले रहा है। आक्रोश इतना है कि पुलिस की लाठी, बैरिकेडिंग और तपती गर्मी की भी परवाह नहीं

है। 21 अप्रैल को महिलाओं का गुस्सा देखते ही बना।

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के घर का घेराव करने जा रही महिलाएं बेरिकेडस तोड़कर 10 जनपथ तक जा पहुंची। इनमें से कुछ को पुलिस ने हिरासत में भी लिया। प्रदेश भाजपा महिला मोर्चा ने सोनिया गांधी के घर पर दिल्ली की कानून व्यवस्था व बलात्कार की बढ़ती घटनाओं को लेकर उग्र प्रदर्शन किया। महिलाएं काले झंडे लेकर पहुंची थी।

इस दौरान पुलिस से धक्का-मुक्की में कई महिलाओं को चोट भी पहुंची। पार्षद संध्या वर्मा तो प्रदर्शन के दौरान ही बेहोश हो गई। ममता नागपाल, संध्या वर्मा, अलका चौधरी, सुरेखा, राजकुमारी व कई अन्य कार्यकर्ताओं को राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस मौके पर भाजपा प्रदेश महिला मोर्चा अध्यक्ष शिखा राय ने कहा कि लचर कानून व्यवस्था के कारण दिल्ली रेप की राजधानी बन गई है। हर दिन ऐसी घटनाएं घटती हैं और दिल्ली सरकार मौन रहती है। मोर्चा की उपाध्यक्ष ममता नागपाल ने कहा कि आम आदमी की बात नहीं सुनी जा रही है।

कांग्रेस के शासनकाल में नैतिकता खत्म हो गई है। बदमाश सड़कों पर खुलेआम घूम रहे है और आम आदमी को पुलिस धमका रही है। शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर पुलिस लाठी भांज रही है। ■

दिल्ली रेप पर भाजपा नेता बरसे

दिल्ली और केंद्र में दोनों जगह कांग्रेस की सरकार है। दोनों सरकार अपना काम ठीक से नहीं कर रही हैं। कर्तव्य में लापरवाही बरती जा रही है। संस्थाएं अपना दायित्व का निर्वहन जिम्मेदारीपूर्वक नहीं कर रही हैं।

-राजनाथ सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

दिल्ली में पांच साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म की तफसील से मिली जानकारी से मैं दहल गई। मैं सोचती थी कि दामिनी मामले के बाद चीजों में बदलाव आएगा। दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्थिति और बदतर ही हुई है।

-सुषमा स्वराज, लोकसभा में विपक्ष की नेता

दिल्ली महिलाओं के लिए असुरक्षित हो गई है। कांग्रेस के पिछले 14 साल के दिल्ली में राज में मां, बेटी और बहनें अपने आप को असुरक्षित पाती हैं। आए दिन बच्चियों, महिलाओं का बलात्कार हो रहा है या अभद्र व्यवहार हो रहा है।

-विजय गोयल, अध्यक्ष, भाजपा दिल्ली प्रदेश

लचर कानून व्यवस्था के कारण दिल्ली रेप की राजधानी बन गई है। हर दिन ऐसी घटनाएं घटती हैं और दिल्ली सरकार मौन रहती है।

-शिखा राय, अध्यक्ष भाजपा महिला मोर्चा दिल्ली प्रदेश

राजग ने की जेपीसी की रिपोर्ट को खारिज करने की अपील

राजग के कार्यकारी अध्यक्ष श्री लाल कृष्ण आडवाणी की अध्यक्षता में 20 अप्रैल 2013 को हुई राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन के घटक दलों के संसदीय दलों के नेताओं की बैठक में संसद के बाकी अधिवेशन से पूर्व देश के सामने खड़े मुद्दों की समीक्षा की गई।

एनडीए ने देश के द्वैत शासकों डा. मनमोहन सिंह और श्रीमती सोनिया गांधी के नेतृत्व में उत्पन्न देश के हालात पर चिंता व्यक्त की। इन नेताओं के निरंतर अनुचित रवैये के कारण वर्तमान यूपीए शासन के दौरान देश में अव्यवस्था, कुशासन और अनियंत्रित भ्रष्टाचार देखने को मिला है।

पश्चिम और पूर्व में दोनों तरफ हमारी सीमाओं का उल्लंघन हुआ है, हमारे वित्त मंत्री दीन हीन तरीके से निवेश की चाहत में दुनिया के चक्कर लगा रहे हैं जैसे भारत कोई भिखारी हो, हमारे रक्षामंत्री अपने मंत्रालय का नेतृत्व संभालने में पूरी तरह विफल रहे हैं, जहां पहले से ही भारी भ्रष्टाचार है। घबराहट, अनिश्चितता, दिशाहीनता और नेतृत्व का अभाव वर्तमान प्रधानमंत्री का चरित्र चित्रण करता है, जो आजादी के बाद अब तक की सबसे भ्रष्ट सरकार के मुखिया हैं, ऐसे व्यवहार करते हैं जैसे उन्हें कुछ पता ही नहीं और इतना सब होने के बावजूद उनके कान में जूं तक नहीं रेंगी है।

राजधानी दिल्ली में बार-बार जघन्य अपराध हो रहे हैं, इसके बावजूद सरकार बेपरवाह है। क्या इसका कभी अंत होगा?

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह एवं कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी के निरंतर अनुचित रवैये के कारण देश में अव्यवस्था, कुशासन और अनियंत्रित भ्रष्टाचार देखने को मिला है।

लगता है इतना ही काफी नहीं था। हाल ही में कोल गेट मामले में सीबीआई के कामकाज मंत्री के स्तर पर हस्तक्षेप किया गया जो उच्चतम न्यायालय के निर्देश पर तैयार की जा रही रिपोर्ट में सरासर उल्लंघन है, 2जी घोटाले पर रिपोर्ट के प्रारुप को पहले ही कुछ गिने-चुने पत्रकारों को दे दिया गया और इसके बाद जेपीसी के सदस्यों को दिया गया। यह संसद की महत्ता को कम करने और रिपोर्ट की विश्वसनीयता का उल्लंघन करता है।

अत: एनडीए की यूपीए से मांग है:

1. क्यों और कैसे आरोपी ए. राजा को जेपीसी के समक्ष पेश होने की अनुमति नहीं दी गई जबकि उन्होंने और जेपीसी के सदस्यों ने इसके लिए बार-बार अनुरोध किया?
2. इस मामले में निर्णय लेने वाले दो प्रमुख मंत्रियों डा. मनमोहन सिंह और श्री चिदम्बरम को जेपीसी से पूछताछ किये बगैर कैसे बरी कर दिया गया?
3. आखिरकार कैबिनेट का एक मंत्री प्रधानमंत्री को कैसे गुमराह कर सकता है?
4. आखिर सरकार की सामूहिक जिम्मेदारी कहां पर है?
5. जेपीसी की यह मनगढंत रिपोर्ट वास्तव में किसने तैयार की है-चैयरमैन ने या यूपीए के किसी और शख्स ने?

जिस तरीके से जेपीसी की रिपोर्ट तैयार की गई उसकी एनडीए सामूहिक रुप से और एक स्वर में कड़ी निंदा करती है, इसमें पूर्व प्रधानमंत्री और एनडीए के मौजूदा चैयरमैन श्री अटल बिहारी वाजपेयी पर यह आरोप लगाया कि उन्होंने जान-बूझकर सरकारी खजाने को नुकसान पहुंचाया- इसकी जितनी भी निंदा की जाए वह कम है। जेपीसी के रिपोर्ट के प्रारुप में जिस तरह धूर्तता से डा. मनमोहन सिंह को क्लीन चिट दी गई है वह पूरी तरह से विश्वासघात है।

इस तरह की बेईमानी के कृत्य से संसद, जनता और देश के साथ विश्वासघात किया गया है। एनडीए जेपीसी के सभी सदस्यों से इस रिपोर्ट को सिरे से खारिज करने की अपील करता है।

इस रिपोर्ट में श्री अरुण शौरी और जसवंत सिंह जैसे एनडीए के मंत्रियों पर शर्मनाक आरोप लगाए गए हैं जिन्हें अपनी ईमानदारी के लिए जाना जाता हैं। यूपीए के कहने पर इन दोनों से सीबीआई पहले ही पूछताछ कर चुकी है और उसके हाथ कुछ नहीं लगा।

एनडीए भारत की जनता का आहवान करती है कि वह यूपीए की ऐसी तमाम गलतियों के खिलाफ खड़ी हो और उसे सत्ता से बेदखल करे। ■

महिला उद्योग की सफलता महिला सशक्तिकरण पर आधारित है : नरेन्द्र मोदी

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 8 अप्रैल 2013 को नई दिल्ली में फिक्की की लेडिज विंग एफएलओ द्वारा आयोजित वार्षिक परिषद को संबोधित करते हुए आधुनिक भारत के निर्माण में मातृशक्ति के सामर्थ्य, गौरव और भागीदारी को सुनिश्चित करने की प्रेरक हिमायत की। उन्होंने कहा कि आधुनिक विकास में महिलाओं को भागीदार बनाने के लिए उन्हें सर्वप्रथम निर्णय में भागीदार बनाना होगा। निर्णय की इस भागीदारी की प्रथम शर्त यह है कि महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण किया जाए। श्री मोदी ने कहा कि गुजरात ने मनोवैज्ञानिक आधार पर नारी सशक्तिकरण की अनोखी पहल की है। देश की गणमान्य महिला उद्योग साहसिक, महिला संगठनों के आमंत्रित प्रतिनिधियों सहित भारी संख्या में महिलाएं एफएलओ के इस कार्यक्रम में मौजूद थी।मुख्यमंत्री ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति की परंपरा और विरासत में माता के प्रति पवित्र और शुद्ध श्रद्धाभावना के संस्कारों का आविर्भाव हुआ है। उन्होंने कहा कि भारत में नदी माता, गौ माता और भारत माता का स्थान सर्वोपरि रहा है, परन्तु 1200 वर्ष के गुलामी काल के परिणामस्वरूप समाज में जो विकृतियां और बुराइयां आई उनके कारण नारी गौरव और सामर्थ्य की उपेक्षा की गई। १८वीं सदी में तो बेटियों को जन्म लेने के साथ ही दूध में डुबोकर मौत के घाट उतार दिया जाता था। इस दर्दनाक सामाजिक बुराई का उल्लेख करते हुए श्री मोदी ने कहा कि 21वीं सदी में भी माता के गर्भ में भ्रूण हत्या करके समाज घोर पाप कर रहा है और इसके परिणामस्वरूप भविष्य में समग्र संसार चक्र बिखर जाएगा और समाज असंतुलित हो जाएगा। श्री मोदी ने इस स्थिति को बदलने के लिए मातृशक्ति को नेतृत्व लेने का आह्वान किया।

श्री मोदी ने कहा कि स्वभाव से संवेदनशील महिला, माता और बहन

समय पर अपनी शक्ति का साक्षात्कार करवा सकती है। नारी शक्ति का झरना है और माता शक्ति का अंबार है। संघर्ष करते रहकर शक्ति का संचय करने वाली नारी के सामर्थ्य को श्री मोदी ने जमकर सराहा। उन्होंने कहा कि महिला उद्योग साहसिकता महिलाओं में सशक्तिकरण के बगैर संभव नहीं है। इनका सशक्तिकरण आर्थिक रूप से उन्हें शक्तिशाली बनाने पर आधारित है। महिला का आर्थिक सामर्थ्य ही उनको निर्णय में भागीदार बना सकता है। अगर भारत का भाग्य बदलना है तो देश की 50 प्रतिशत नारी शक्ति के सामर्थ्य को स्वीकार करने के साथ ही उन्हें गौरव और प्रतिष्ठा देनी होगी।गुजरात में महिला सशक्तिकरण के प्रेरणात्मक उदाहरण देते हुए मुख्यमंत्री श्री मोदी ने कहा कि राज्य में लाखों परिवारों में संपत्ति महिला के नाम पर किये जाने पर कोई शुल्क नहीं लगता। इस योजना के चलते गुजरात में लाखों महिलाओं को संपत्ति का मालिक बनाया गया है। शाला में बालक के प्रवेश नामांकन के वक्त उसकी माता का नाम अनिवार्य रूप से लिखने की राज्य सरकार की नीति के परिणामस्वरूप गुजरात की मातृशक्ति को अनोखा गौरव मिला है। मुख्मयंत्री ने महिला सरपंचों के नेतृत्व में 300 से ज्यादा महिला समरस ग्राम पंचायतों के सफल प्रशासन की सराहना करते हुए कहा कि गुजरात की महिलाओं ने प्रशासन में भी कुशल नेतृत्व उपलब्ध करवाया है। समाज की प्रत्येक वर्ग की महिलाओं में कोई न कोई आंतरिक

शक्ति विद्यमान है और इस शक्ति को उजागर करने के लिए व्यवस्था, सुरक्षा और अवसर दिये जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि भारतीय नारी के लिए पश्चिम की विचारधारा भ्रामक है। भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में महिलाओं ने अपने आर्थिक सामर्थ्य की प्रतीति करवाई है। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी नारीशक्ति का प्रभुत्व स्थापित हुआ है।समाज में बेटी-बेटे के भेदभाव को मिटाने की जागृति पर बल देते हुए श्री मोदी ने कहा कि गुजरात में बेटियों को जब भी अवसर मिला है, तब उन्होंने बेटों से भी बढ़कर हर क्षेत्र में मैदान मारा है। व्यक्ति, परिवार और समाज नारीशक्ति के गौरव और सामर्थ्य को प्रोत्साहित करने के लिए वातावरण तैयार करें तो महिलाएं उनकी उत्तम भागीदारी से स्थिति को सुधारने में निर्णायक शक्ति का योगदान दे सकती हैं। गुजरात में सफल महिला उद्योग साहसिकों की सूझबूझ वाली सफलतागाथाओं का उदाहरण देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि गांधीजी की अनुयायी गंगाबेन मजुमदार ने चरखे से बुनाई के लिए महिला उद्योग साहसिकता का समूह कार्यरत किया था। अहमदाबाद में इन्दुबेन खाखरावाला, जशुबेन के पिज्जा, आदिवासी महिलाओं द्वारा लिज्जत पापड़ के उद्योग और श्वेत क्रांति की मशाल समान अमूल सहकारिता में महिलाओं की भागीदारी जैसे अनेक महिला उद्यमशीलता के प्रेरणास्रोतों का श्री मोदी ने उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि नारीशक्ति स्वयं संघर्ष करके भी सफल उद्यमी बन सकती है।

मुख्यमंत्री ने फिक्की की महिला शाखा को समग्र देश में महिला उद्योग साहसिकों की सफलतागाथा का संशोधन कर उसे पुस्तक के रूप में पेश करने तथा वेबसाइट बनाने का सुझाव देते हुए कहा कि भारत में कॉरपोरेट सेक्टर की कंपनियों के परिवार की महिलाएं कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी की प्रवृत्ति का नेतृत्व लें तो उत्तम परिणाम दे सकती हैं। गुजरात में ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए मिशन मंगलम और सखी मंडल की प्रवृत्तियों की सफलता को प्रेरणास्रोत करार देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि गुजरात के समुद्रीतट पर समुद्री शैवाल (सी विड कल्टीवेशन) का पायलट प्रोजेक्ट सफल हुआ है जिसमें सागर तट पर बसने वाले सागरखेडु समाज की महिलाएं समुद्री शैवाल की खेती में पारंगत हुई हैं। गुजरात के आदिवासी क्षेत्र में भी महिलाओं ने सखी मंडलों द्वारा केटरिंग मैनेजमेंट के कार्य द्वारा नई आर्थिक प्रवृत्ति की दिशा दिखलाई है। इतना ही नहीं, वाड़ी प्रोजेक्ट और फूलों की खेती में आदिवासी किसान बहनों ने अपना कौशल्य दिखाते हुए फूलों-काजू के निर्यात द्वारा समृद्धि की दिशा दिखलाई है। उन्होंने कहा कि गुजरात में हस्तकला कारीगरी की परंपरागत कला में भी ग्रामीण महिलाओं ने आर्थिक प्रवृत्तियों द्वारा देश-विदेश में प्रशंसा पाई है। राज्य सरकार ने इसकी बाजार व्यवस्था तक उद्दीपक का किरदार निभाया है।

श्री मोदी ने कहा कि गुजरात में पंचायत और स्थानीय स्वराज की संस्थाओं में महिलाओं को 50 प्रतिशत प्रतिनिधित्व देने वाला विधेयक विधानसभा में पास किया गया है लेकिन इसे अमल में नहीं लाया जा सका, क्योंकि गुजरात के राज्यपाल की इसे मंजूरी नहीं मिली है। मुख्यमंत्री ने भारत माता का ऋण चुकाने और देश की सेवा के लिए अपना दायित्व निभाने का प्रेरणात्मक अनुरोध करते हुए कहा कि, हम जो कुछ भी हैं उसमें समाज के किसी न किसी व्यक्ति और समुदाय का हम पर ऋण है। इस कर्ज को चुकाने के लिए भारत माता की सेवा करने के लिए हम सभी को संकल्प लेना होगा।

मुख्यमंत्री ने महिला जागृति की सराहना करते हुए कहा कि सोशल मीडिया- ट्विटर और फेसबुक जैसे तकनीकी माध्यमों के जरिए अनेक महिलाएं लैंगिग असमानता सहित विविध सामाजिक विषयों और महिलाओं की समस्याओं के संबंध में प्रो-एक्टिव भूमिका निभाते हुए नवीनतम सुझाव देती हैं। अनेक महिलाओं ने विविध विषयों पर अपने सूझाव सोशल मीडिया पर मुझसे साझा किये हैं। मुख्यमंत्री के साथ फिक्की लेडिज विंग की महिलाओं ने प्रश्नोत्तरी भी की।

प्रारंभ में फिक्की लेडिज विंग की प्रमुख कविता वरदराजन ने श्री मोदी के नेतृत्व में गुजरात द्वारा विकास और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में हासिल उपलब्धियों की सराहना करते हुए इसे देश के लिए प्रेरणास्त्रोत करार दिया और मुख्यमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया। फिक्की की प्रमुख नैनालाल किदवई और एफएलओ की नवनियुक्त प्रमुख मालविका ने भी मुख्यमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया। ■

आधुनिक विकास में महिलाओं को भागीदार बनाने के लिए उन्हें सर्वप्रथम निर्णय में भागीदार बनाना होगा। निर्णय की इस भागीदारी की प्रथम शर्त यह है कि महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण किया जाए। गुजरात ने मनोवैज्ञानिक आधार पर नारी सशक्तिकरण की अनोखी पहल की है।

जगदीश टाइटलर के खिलाफ फिर से मुकदमा खोलने का आदेश स्वागत योग्य है : भाजपा

(गत11 अप्रैल 2013 को भाजपा प्रवक्ता श्रीमती निर्मला सीतारमन द्वारा जारी प्रेस वक्तव्य का पाठ)

भाजपा सेशन कोर्ट द्वारा श्री जगदीश टाइटलर के खिलाफ केस को पुनः खोलने के आदेश का स्वागत करती है। श्री जगदीश टाइलटर कांग्रेस कार्यसमिति के स्थाई आमंत्रिती है और वे एआईसीसी की वेबसाइट का स्वतंत्र कार्यभार संभाले हुए हैं। उन्होंने 2004 में चुनाव लड़ा और फिर से 2009 में उन्हें चुनाव लड़ने के लिए चुना गया, परंतु लोगों के विरोध के कारण उन्हें चुनाव लड़ने से हटना पड़ा।

2700 से अधिक सिख महिलाएं, बच्चे और आदमी मारे गए, बहुत से जिंदा जला दिए गए। जैसा कि बहुत से गवाहों ने स्वयं अपनी आंखों से देखा था कि अनेक कांग्रेस नेताओं के नेतृत्व में उत्पात मचाती भीड़ ने सिख उत्पीड़ियों के गले में जलते टायर लटका दिए थे-जिनमें अभी तक भी बहुत से नेताओं को दंड नहीं मिल पाया है।

नानावती कमीशन का कहना था- ''दर्ज किए साक्ष्यों से पता चलता है कि स्थानीय कांग्रेसी नेताओं और कार्यकर्ताओं ने सिखों पर हमला करने के लिए भीड़ को उकसाया या मदद की।''

कांग्रेस पार्टी ने नरसंहार करने वाले अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं की सक्रिय अपराधपूर्ण सहभागिता पर परदा डालने के लिए क्या-क्या चालें नहीं चलीं। गवाहों को धमकाया गया और उत्पीड़ितों को पुलिस थानों में अपने केसों को फाइल करने से रोका गया। पुलिस के कुछ भ्रष्ट लोगों के साथ मिलकर कांग्रेसियों ने बड़े पैमाने पर साक्ष्य मिटा डाले।

नानावती ने इस पूरे मामले का निष्कर्ष निकालते हुए कहा था कि कानून-व्यवस्था के मामले को बुरी तरह

कांग्रेस पार्टी ने नरसंहार करने वाले अपने नेताओं और कार्यकर्ताओं की सक्रिय अपराधपूर्ण सहभागिता पर परदा डालने के लिए क्या-क्या चालें नहीं चलीं। गवाहों को धमकाया गया और उत्पीड़ितों को पुलिस थानों में अपने केसों को फाइल करने से रोका गया। पुलिस के कुछ भ्रष्ट लोगों के साथ मिलकर कांग्रेसियों ने बड़े पैमाने पर साक्ष्य मिटा डाले।

से विफल कर दिया गया था और इसके लिए उन्होंने पुलिस बल को जिम्मेदार ठहराया। कानपुर मित्तल कमेटी ने 72 पुलिस अधिकारियों के नाम लिए थे जब कि जैन अग्रवाल कमेटी ने 90 अधिकारियों के नाम गिनाए थे। उनकी सिफारिश थी कि 30 अधिकारियों को तुरंत बरखास्त कर दिया जाए।

यह भी आरोप है कि कांग्रेस पार्टी ने विभागीय कार्रवाई में यह बात जानते हुए प्रक्रिया पर परदा डाले रखने या उससे विलंब करने का कार्य किया कि किसी अधिकारी या सरकारी कर्मचारी पर उनके रिटायरमेंट के चार वर्ष बाद किसी प्रकार का मुकद्मा नहीं चलाया जा सकता है।

नानावती कमीशन का यह भी कहना है कि कर्फ्यू के बावजूद भी हिंसात्मक भीड़ निर्द्वंद्व होकर घूम रही थी और लूटमार तथा हत्याओं के कार्य कर रही थी।

जस्टिस रंगानाथ मिश्रा कमीशन ने दिल्ली प्रशासन पर आरोप था कि उसने फौज बुलाने में बेहद देरी की। हालांकि दिल्ली में पर्याप्त बल मौजूद था, फिर भी कुछ क्षेत्रों में उपद्रव होने के तीन दिन बाद तक और कुछ क्षेत्रों में 4 दिन बाद तक भी फौज तैनात नहीं की गई।

कांग्रेस पार्टी ने ऐसे प्रकाशनों पर भी प्रतिबंध लगा दिया था जिनमें परदा डालने के बारे में सवाल खड़े किए जा रहे थे।

सीबीआई का दुरूपयोग तो हर जगह पर दिखाई पड़ ही रहा था। रंगानाथ कमीशन का यह भी कहना था कि जहां कहीं भी किसी भी उत्पीड़ित या गवाह ने किसी राजनैतिक नेता या पुलिस अधिकारी का नाम लेने की बात कहीं तो वह ऐसे केसों को रजिस्टर नहीं किया गया। कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सभी स्तरों पर अपने नेताओं को बचाने के लिए सीबीआई पर दबाव डालने की चालें चलीं। मीडिया रिपोर्टों से पता

चलता है कि 1990 में पोट्टी-रोजा की सिफारिशों पर आधारित सिफारिशों के अनुसार सीबीआई ने एक कांग्रेसी नेता सज्जन कुमार से पूछताछ की और उनके खिलाफ आरोप लगाए थे। तब सज्जन कुमार के समर्थकों ने धमकियां दी थी और उन्हें बंद करा दिया था। दुर्भाग्य से, इस कमेटी को भंग कर दिया गया था।

अनेकानेक कमीशनों ने यह पाया है कि दंगों के दौरान दिल्ली पुलिस ''निष्क्रिय बनी रही और लोगों को सुरक्षा प्रदान नहीं की।''

कोर्ट में गुमराहपूर्ण रिपोर्ट दाखिलकर सीबीआई का भी दुरूपयोग किया गया जिसके कारण माना जाता है कि इससे पहले भी एक बार अतिरिक्त चीफ मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट की अदालत में टाइटलर के खिलाफ केस खारिज हुआ था। सीबीआई ने तो प्रत्यक्षदर्शियों की जांच करने के लिए मजिस्ट्रेट द्वारा आदेशों का अनुपालन तक नहीं किया था।

अब न्यूयार्क में बस रहे दो महत्वपूर्ण प्रत्यक्षदर्शियों- श्री जसबीर सिंह और श्री सुरिंद्र सिंह ने आरोप लगाया है कि सीबीआई ने स्वतंत्र और निष्पक्ष ट्रायल नहीं होने दिया। उनका संदेह है कि यह सब कुछ टाइटलर को बचाने के लिए किया गया। दिसंबर 2008 में, सीबीआई की एक टीम उनका बयान दर्ज करने के लिए न्यूयार्क गई थी।

सब कुछ होते हुए भी, मार्च 2009 में सीबीआई ने टाइटलर को क्लीन चिट दे दी। विपक्षी पार्टियों और अनेक सिख संस्थाओं ने इसका विरोध किया। यह उल्लेखनीय है कि जिस 'चीफ' ने यह क्लीन चिट दी थी, आज वही व्यक्ति सरकार ने ईनाम पाकर एक राज्यपाल के पद की शोभा बढ़ा रहा है।

ऐसे और कई कांग्रेस नेता हैं जिन पर विभिन्न कमीशनों और कमेटियों ने साफ तौर पर इस प्रायोजित नरसंहार का आरोप रहा था, जिनमें स्वर्गीय एचकेएल भगत, धर्मवीर शास्त्री, सज्जन कुमार, कमलनाथ और जगदीश टाइटलर शामिल हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि न्यूयार्क की साउदर्न डिस्ट्रिक्ट की अमरीकी डिस्ट्रिक्टकोर्ट में एक सिविल मुकदमा भी दायर है। 23 जनवरी 2013 को स्विट्जरलैंड को ग्रिसन राज्य में कमलनाथ के खिलाफ भी एक केस दायर है। भाजपा टाइटलर के खिलाफ केस को पुन: खोलने के अदालत के आदेश का स्वागत करती है। ■

चीन से निर्भीक होकर निपटे सरकार, साथ देगी भाजपा : राजनाथ सिंह

भाजपा ने केन्द्र सरकार से कहा कि भारतीय क्षेत्र में चीनी घुसपैठ मामले से सरकार निर्भीक होकर निपटे और इसमें वह उसका पूरा साथ देगी। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कहा, ''चीनी घुसपैठ की घटना से पूरा देश चिंतित है। देश सरकार से जानना चाहता है कि वह इस मामले से कैसे निपट रही है। भाजपा चाहती है कि सरकार इस मामले से निर्भीकता से निपटे। इस मुद्दे पर हम सरकार के साथ होंगे।''

यह कहते हुए कि इस मामले को केवल 'फ्लैग मीटिंग' के जरिये नहीं सुलझाया जा सकता है, भाजपा प्रवक्ता श्री प्रकाश जावडेकर ने कहा, ''यह बहुत ही गंभीर मामला है। दो सप्ताह पहले चीन के 50 सशस्त्र सैनिक और दो हेलीकॉप्टर हमारी सीमा के 10 किलोमीटर अंदर तक घुस आए।''

उन्होंने कहा कि चीन ने दौलत बेग ओल्डी क्षेत्र हवाई पट्टी तक घुसपैठ की है और यह वह जगह है जहां से 1962 युद्ध के दौरान भारतीय विमान उड़ान भरा करते थे।

श्री जावडेकर ने आरोप लगाया कि इस अति गंभीर मामले को जिस गंभीरता से निपटने की आवश्यकता है, सरकार वैसे नहीं निपट रही है।

उन्होंने कहा, ''इस मुद्दे को सीमा पर फ्लैग मीटिंग से नहीं सुलझाया जा सकता है। ऐसी दो मीटिंग हो चुकी हैं और दोनों असफल रही हैं। मामले से प्रधानमंत्री, विदेशमंत्री और रक्षामंत्री के स्तर से निपटने की जरूरत है।''

इसे सामरिक महत्व का मुद्दा बताते हुए भाजपा प्रवक्ता ने कहा भारत को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि घुसपैठ से पहले की यथास्थिति बहाल हो।

चीन के इरादों को खतरनाक बताते हुए उन्होंने कहा कि वह अरुणाचल प्रदेश को अपना हिस्सा बताता है। इसके अलावा उसने गिलगिट में अवैध निर्माण किए हैं। वह पाकिस्तान, श्रीलंका, मारिशस, मालदीव और म्यंमार जैसे भारत के पड़ोसी देशों में भी अपनी उपस्थिति बढ़ा रहा है।■

राजग की सरकार यूपीए से बेहतर थी

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) बनाम संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग)। राजग का कार्यकाल 1998 से 2004 तक 6 वर्ष रहा और संप्रग 2004 से देश पर शासन कर रही है, यानी उसने 9 साल पूरे कर लिए है। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्ववाली राजग सरकार के समय जहां देश में सुशासन का दौर रहा वहीं वर्तमान प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार कुशासन का पर्याय बन चुकी है।

संप्रग शासन में आर्थिक कुप्रबंधन के चलते अराजकता है। महंगाई बेलगाम है। चीनी, खाद्य तेल, दालों, सब्जियों, दूध और कई अन्य खाद्य और अखाद्य वस्तुओं के मूल्यों में भारी वृद्धि के कारण लोगों को दो वक्त का भोजन जुटाने में भी पसीने छूट रहे हैं। वहीं दूसरी ओर भ्रष्टाचार के महारोग ने देशवासियों के माथे पर चिंता की लकीरें खींच दी है।

ऐसे में देश की राजग सरकार को जनता याद करने लगी है। उस समय साफ-सुथरी सरकार थी। आर्थिक व्यवस्था मजबूत थी। रुपया बहुत मजबूत था, विदेशी मुद्रा भंडार बहुत तेजी से बढ़ रहे थे। महंगाई नियंत्रित थी। कालाबाजारी खत्म हो गई थी। बुनियादी ढांचे का बड़ी तेजी से विकास हआ था। सड़क संपर्क और दूरसंचार संपर्क बेहतर हुआ। कृषि की सुगठित व्यवस्था के लिए कोल्ड स्टोरेज और गोदामों की क्षमता बढ़ गई। 1998 में परमाणु परीक्षण से लोगों का स्वाभिमान ऊंचा हुआ। यानी भारत की साख और धाक मजबूत हुई।

राजग और संप्रग शासन का तुलनात्मक ब्यौरा

अर्थव्यवस्था

राजग : घोटालामुक्त साफ-सुथरी सरकार।

संप्रग : घोटालों का अंतहीन सिलसिला, राष्ट्रमंडल खेल घोटाला, 2जी घोटाला, कोयला घोटाला, हेलीकॉप्टर घोटाला, नोट के बदले वोट घोटाला, आदर्श कोऑपरेटिव सोसाइटी घोटाला, एंट्रिक्स कॉरपोरेशन लिमिटेड - देवास मल्टीमीडिया घोटाला।

विकास

राजग : राजग ने 4 प्रतिशत सकल घरलू उत्पाद विकास से शुरूआत की थी और वह देश को 8 प्लस प्रतिशत विकास के पथ पर ले आई।

संप्रग : संप्रग को 8 प्लस प्रतिशत जी.डी.पी. की विकास दर विरासत में मिली थी और यह इसे कम करके 4 प्रतिशत विकास दर पर ले आई है।

रोजगार

राजग : 8 मिलियन नौकरियों का सृजन किया।

संप्रग : केवल 2 मिलियन नौकरियों का सृजन किया है।

यातायात

राजग : राजपथों का निर्माण प्रतिदिन 11 कि.मी. के स्तर पर पहुँच गया था।

संप्रग : प्रतिदिन 22 कि.मी. राजपथ बनाने के बड़े-बड़े वायदे के बावजूद यह मात्र 3 कि.मी. प्रतिदिन रह गया है।

गैस कनैक्शन

राजग : राजग ने चार वर्षों के दौरान 40 मिलियन अतिरिक्त परिवारों का गैस कनैक्शन देना सुनिश्चित किया था।

संप्रग : संप्रग सरकार गत 9 वर्ष के कार्यकाल में इन आंकड़ों के बराबर भी नहीं पहुंची है।

आतंकवाद

राजग : पोटा कानून बनाया। कारगिल विजय अभियान।

संप्रग : जुलाई 2005 से अब तक देश के विभिन्न भागों में 25 बड़े आतंकवादी हमले हुए, जिनमें करीब 500 निर्दोष भारतीय मारे गए।

संवैधानिक संस्थाएं

राजग : संवैधानिक संस्थाओं की साख बनी रही।

संप्रग : केन्द्रीय सतर्कता आयोग (सीवसी) और नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) पर हमला। सीबीआई को राजनीतिक हथियार बनाया।

संघीय ढांचा

राजग : सभी राज्यों पर ध्यान दिया।

संप्रग : गैर कांग्रेसी एवं गैर यूपीए राज्य सरकारों के साथ भेदभाव जारी।

■

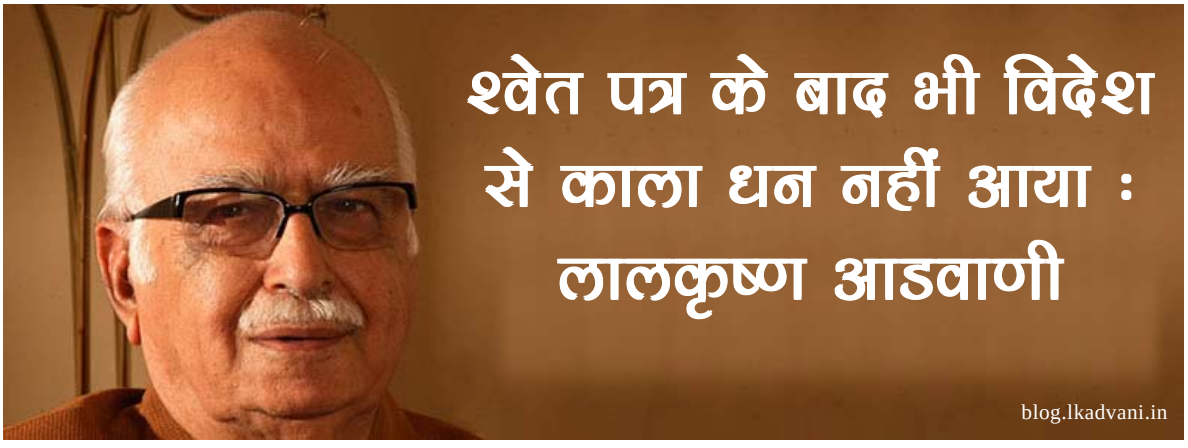

श्वेत पत्र के बाद भी विदेश से काला धन नहीं आया : लालकृष्ण आडवाणी

blog.lkadvani.in

भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने आरोप लगाया है कि केंद्र की संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार काला धन पर श्वेत पत्र लाने के बाद भी विदेशों में जमा काला धन का एक पैसा भी वापस नही ला पाई है। गत 10 अप्रैल को श्री आडवाणी ने अपने ताजा ब्लॉग में लिखा कि मई 2012 में तत्कालीन वित्त मंत्री और मौजूदा राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने संसद में श्वेत पत्र रखा था जिसमें सरकार की ओर से विदेशों में जमा काला धन वापस लाने और देश में काला धन पर अंकुश लगाने का आश्वासन दिया गया था।

श्री आडवाणी ने कहा कि उन्हें इस बात का दुख है कि श्वेत पत्र के अनुसार आगे कार्रवाई नही की गई। इस साल मई में श्वेत पत्र को संसद में पेश किए जाने के एक साल हो जाएंगे लेकिन अभी तक सरकार की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई। अमेरिका जर्मनी यहां तक पेरू नाईजीरिया जैसे छोटे देशों ने भी विदेशों में जमा अपना काला धन वापस ले लिया।

उन्होंने कहा कि भारत सरकार के पास विदेशों में काला धन रखने वालो की सूची भी है। जिनके खाते स्विस बैक में हैं उनका नाम है, लेकिन अभी तक एक पैसा भी वापस लाने की बात सामने नहीं आई है।

> ***अमेरिका, फ्रांस और जर्मनी के भारी दबाव के चलते स्विट्जरलैंड का सबसे बड़ा बैंक यूबीएस अपने 4000 से अधिक अमेरिकी ग्राहकों के नाम बताने पर राजी हुआ। वहां के कुछ अन्य बैंक भी कर चोरी वाले ऐसे खातों की जानकारी देने को बाध्य हुए हैं। उन्होंने कहा कि कालेधन के खिलाफ छेड़ी गई इस वैश्विक जंग से भारत को काफी लाभ हो सकता है। 'यह उम्मीद ही की जा सकती है कि भारत इस घटनाक्रम का पूरा फायदा उठाएगा।'***

गत 24 अप्रैल को अपने ब्लाग में भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने इस बात पर खेद जताया कि कालेधन पर सरकार की ओर से श्वेत पत्र लाए जाने के बाद ऐसे खातों का पता लगाने और कर चोरी के धन की उगाही करने संबंधी आगे की कोई कार्रवाई नहीं की गई।

श्री आडवाणी ने कहा, 'भाजपा को इस बात का खेद है कि श्वेत पत्र पर आगे की कोई कार्रवाई नहीं की गई। भारतीय राजनीति और शासन का, खास कर पिछले नौ सालों से भ्रष्टाचार और कालेधन से सत्यानाश होता जा रहा है।' उन्होंने कहा कि दूसरी तरफ शक्तिशाली पश्चिमी देशों की ओर से बैंकिंग के गोपनीयता कानूनों को बदलने का जबर्दस्त दबाव बनाया जा रहा है जिससे काला धन के पनाहगाह माने जाने वाले स्विट्जरलैंड के बैंक भारी संकट का सामना करने की स्थिति में आ गए हैं।

भाजपा नेता ने कहा कि अमेरिका, फ्रांस और जर्मनी के भारी दबाव के चलते स्विट्जरलैंड का सबसे बड़ा बैंक यूबीएस अपने 4000 से अधिक अमेरिकी ग्राहकों के नाम बताने पर राजी हुआ। वहां के कुछ अन्य बैंक भी कर चोरी वाले ऐसे खातों की जानकारी देने को बाध्य हुए हैं। उन्होंने कहा कि कालेधन के खिलाफ छेड़ी गई इस वैश्विक जंग से भारत को काफी लाभ हो सकता है। 'यह उम्मीद ही की जा सकती है कि भारत इस घटनाक्रम का पूरा फायदा उठाएगा।' ■

मेरा कॉल डिटेल रिकॉर्ड्स और एक नागरिक की गोपनीयता का अधिकार

✍ अरुण जेटली

पिछले कुछ महीनों से, मैं अपने मोबाइल फोन की निगरानी से जुड़ी विभिन्न खबरों को काफी करीब से देख रहा हूं। मेरे कॉल डिटेल रिकॉर्ड तक पहुंचने का प्रयास किया गया था। इस मामले में हुई प्रगति की मुझे जानकारी देने के लिए दिल्ली पुलिस के अधिकारी दो बार मुझसे मिल चुके हैं।

तथ्य

तीन बार दिल्ली पुलिस ने आधिकारिक तौर पर मुझसे उस मोबाइल फोन के कॉल डिटेल रिकॉर्ड्स मांगे जिसे मैं रोजाना इस्तेमाल करता हूं। ये डिटेल्स दक्षिणी जिला, केन्द्रीय जिला और दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने मांगे थे। आधिकारिक तौर पर कॉल डिटेल रिकॉर्ड्स मांगने के लिए दिये गए कारण विचित्र और बेतुके हैं। लगता है कि दो अलग-अलग मौकों पर दो बार कॉल डिटेल रिकॉर्ड्स दिल्ली के एक फार्महाउस में हुए दोहरे हत्याकांड के संबंध में सत्यापन के लिए मंगाए गए। तीसरी बार दिल्ली पुलिस के हैड कान्स्टेबल ने डिटेल्स मांगे और इन्हें इस आधार पर सफलतापूर्वक प्राप्त कर लिया कि वह साकेत कोर्ट से लौट रहा था। एक अनाम स्रोत ने उसे सलाह दी कि वह मेरे टेलीफोन नम्बर के कॉल डिटेल रिकॉर्ड चैक करे क्योंकि इससे जाली मुद्रा के रैकेट के संबंध में कुछ सबूत मिल सकते हैं। जाहिर है कि दोनों ही बहाने स्पष्ट रुप से फर्जी थे। यहां

तीन बार दिल्ली पुलिस ने आधिकारिक तौर पर मुझसे उस मोबाइल फोन के कॉल डिटेल रिकॉर्ड्स मांगे जिसे मैं रोजाना इस्तेमाल करता हूं। ये डिटेल्स दक्षिणी जिला, केन्द्रीय जिला और दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने मांगे थे। आधिकारिक तौर पर कॉल डिटेल रिकॉर्ड्स मांगने के लिए दिये गए कारण विचित्र और बेतुके हैं।

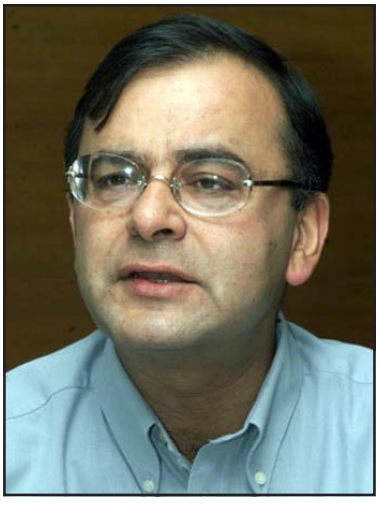

तक कि ख्याली पुलाव भी बनाए जाएं तो भी इस तरह के अपराधों के संबंध में मेरे फोन डिटेल्स से कोई सबूत उपलब्ध नहीं हो सकते। इन अपराधों से जुड़े लोगों से मेरा न तो कोई परिचय और न ही इन अपराधों से किसी तरह का कोई संबंध।

एक अन्य घटना में, दिल्ली पुलिस ने एक निजी जासूसी एजेंसी के इशारे पर काम कर रहे पुलिस के एक कान्स्टेबल को कुछ ऐसे फोन के कॉल डिटेल रिकॉर्ड लाने का काम सौंपा जो मेरे आसपास के लोग इस्तेमाल कर रहे थे। मेरे नाम के दो फोन दो ड्राइवर इस्तेमाल कर रहे थे जिन्हें मैं बारी-बारी से इस्तेमाल करता था और तीसरा मेरा बेटा इस्तेमाल करता था। जब मैं अपनी कार या किसी मीटिंग में होता था, मैं अपने ड्राइवर के नंबरों पर कॉल लेता था। दिल्ली पुलिस का दावा है कि एक सर्विस प्रोवाइडर के जागरुक कर्मचारी ने इस कोशिश को नाकाम कर दिया क्योंकि उसे इस कारोबार में किसी तरह की गड़बड़ी का अंदेशा हो गया था।

इन कॉल्स डिटेल पर आधिकारिक और गैर कानूनी चैनलों के जरिये नवम्बर-दिसम्बर, 2012 और जनवरी, 2013 में नजर रखी जा रही थी। हैड कान्स्टेबल और कान्स्टेबल स्तर के अधिकारियों सहित पुलिस के जूनियर अधिकारी इन कॉल डिटेल रिकार्ड्स तक पहुंच सकते थे।

जाहिर है कि इस अवधि के दौरान कोई मेरे कॉल डिटेल में कुछ सबूत पाने का दुस्साहस करने की कोशिश कर रहा था। ये मिलाजुला प्रयास उन फोनों पर किया जा रहा था जिनका मैं रोजाना इस्तेमाल करता था और इसमें उन लोगों के फोन भी शामिल थे जो मेरे साथ रहते

थे जिनके फोन मैं कभी-कभी इस्तेमाल कर लेता था। खेद की बात है कि दिल्ली पुलिस का मानना है कि इन सभी प्रयासों का एक दूसरे से कोई लेना-देना नहीं हैं और इसमें कोई दम नहीं है कि उन लोगों पर नजर रखने के सफल और असफल प्रयास किये गए जिनके साथ कठिन समय के दौरान मैं सम्पर्क में था। दिल्ली पुलिस के इस स्पष्टीकरण को स्वीकार करना मेरे लिए कठिन है कि वह इसके मास्टर माइंड का पता लगाने में असमर्थ रही है और यह महज एक संयोग है कि मेरे कॉल डिटेल लेते समय ही अनेक गतिविधियां हुई।

दिल्ली पुलिस मानती होगी कि इन घटनाक्रमों का एक दूसरे से कोई लेना-देना नहीं है। इस काम में किसका हाथ है, इसका पता लगाने में दिल्ली पुलिस की असमर्थता का कतई ये मतलब नहीं है कि कोई मास्टर माइंड नहीं था। या तो मास्टर माइंड के पहचान का पता लगाने के लिए की गई जांच पूरी तरह अपर्याप्त थी या दिल्ली पुलिस को लग रहा था कि मास्टर माइंड का नाम लेकर वह परेशानी में पड़ सकती है। मैं अब भी, पूरा अनुमान लगा सकता हूं। यह एक सरकारी एजेंसी द्वारा आउट सोर्स की कार्रवाई हो सकती है या एक निजी शरारती कार्रवाई।

प्रभाव

इस मुद्दे को उठाने का मेरा उद्देश्य कोई सहानुभूति लेना नहीं है। मैंने इस मुद्दे को इसलिए उठाया है क्योंकि जनहित के कुछ बड़े सवाल इससे जुड़े हुए हैं।

सबसे पहले, भारत के प्रत्येक नागरिक के पास गोपनीयता का अधिकार है। गोपनीयता का अधिकार उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अंतर्निहित पहलू है। गोपनीयता के अधिकार में हस्तक्षेप

सरकार हाल ही में अनेक गतिविधियों जैसे विवाह के पंजीकरण से लेकर सम्पत्ति के दस्तावेजों के निष्पादन तक की पूर्व शर्त के रुप में आधार नम्बर को अस्तित्व में लाया है। क्या जो दूसरों के मामलों में दखल करते हैं वे इस व्यवस्था को तोड़कर बैंक खातों और अन्य महत्वपूर्ण विवरणों तक पहुंचने में समर्थ होंगे? अगर ऐसा संभव होता है तो इसके नतीजे बेहद खराब होंगे।

उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता में हस्तक्षेप है जो अनुचित, अन्यायपूर्ण और अतर्कसंगत है। किसी व्यक्ति के कॉल डिटेल रिकॉर्ड अनेक तरह के कारोबार का ब्यौरा दे सकते हैं। एक औसत नागरिक के मामले में यह उसके संबंधों पर असर डाल सकते हैं। एक पेशेवर या एक बिजनेस करने वाले के मामले में उसके वित्तीय कारोबार पर असर पड़ सकता है। एक पत्रकार के मामले में इससे उसके स्रोत का पता लग सकता है। एक राजनीतिज्ञ के मामले में इससे उन लोगों की पहचान पता लग सकती है, जिनके साथ उसकी नियमित बातचीत होती है। प्रत्येक व्यक्ति को अकेले जीने का अधिकार है। एक उदार समाज में उन लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है जो किसी व्यक्ति के निजी मामलों में ताक-झांक करते हैं। किसी को भी यह जानने का अधिकार नहीं है कि उसकी और किससे बातचीत होती है। बातचीत की प्रकृति, जिन लोगों से बातचीत हुई उनकी पहचान और बातचीत की आवृत्ति गोपनीयता का गंभीर उल्लंघन है। अगर पुलिस का कान्स्टेबल और हैड कान्स्टेबल आधिकारिक तौर पर (यहां तक कि झूठे बहाने से) या अनधिकृत तौर पर किसी व्यक्ति के (इस मामले में संसद में विपक्ष के नेता) कॉल डिटेल रिकार्ड्स तक पहुंच जाता है, उस व्यक्ति की स्वतंत्रता खतरे में पड़ जाएगी।

सांसद के मामले में, यह अतिरिक्त सवाल उठता है। पत्रकारों की तरह एक सांसद को भी विभिन्न स्रोतों से जानकारी मिलती रहती हैं। यह जनहित में है कि स्रोतों की पहचान न बताई जाए। अधिकतर घोटाले अंदर के लोगों ने ही उजागर किये हैं। अगर स्रोत की जानकारी बता दी जाएगी तो स्रोत खत्म होने और लोगों के हितों पर असर पड़ने का खतरा पैदा हो जाएगा। एक सांसद के पास कई अपरिभाषित विशेषाधिकार हैं। किसी को भी यह जानने का अधिकार नहीं है कि उससे किसकी बातचीत हुई। अगर उसके साथ जिन लोगों की बातचीत होती है उनका पता चल जाए तो कोई भी किसी सांसद को कोई जानकारी देने के लिए तैयार नहीं होगा। यह जनता के हित के लिए हानिकारक होगा। अगर विपक्ष के नेता के विशेषाधिकार वाले फोन के रिकॉर्डो तक इतनी आसानी से पहुंचा जा सकता है, तो यह सोचकर किसी के भी रोंगटे खड़े हो जाएंगे कि एक साधारण नागरिक का क्या होगा ?

इस घटना ने एक अन्य, लेकिन जायज खौफ की तरफ लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है। हम लोग आधार नम्बर के युग में प्रवेश कर चुके हैं। सरकार हाल ही में अनेक गतिविधियों जैसे विवाह के पंजीकरण से लेकर सम्पत्ति के दस्तावेजों के निष्पादन तक की पूर्व शर्त के रुप में आधार नम्बर को अस्तित्व में लाया है। क्या जो दूसरों के मामलों में दखल करते हैं वे इस व्यवस्था को तोड़कर बैंक खातों और अन्य महत्वपूर्ण विवरणों तक पहुंचने में समर्थ होंगे? अगर ऐसा संभव होता है तो इसके नतीजे बेहद खराब होंगे। ■

(लेखक राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं)

यूरोपीय संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौता – विनाश का प्रतीक

✍ डॉ. मुरली मनोहर जोशी

प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने आगामी वर्ष में देश की आर्थिक व्यवस्था के सुधार को दुरूस्त करने के लिए अपने रोडमैप की घोषणा करते हुए कहा है कि यूपीए सरकार आर्थिक सुधारों पर जोर-शोर से काम करते हुए अनेकानेक आर्थिक क्षेत्रों को विदेशी पूंजी लगाने और बहुराष्ट्रीय वित्तीय एजेंसियों के लिए निवेश के द्वार खोल देगी। यह स्मरणीय है कि अनेक वित्तीय विशेषज्ञों तथा कई राजनैतिक दलों ने भी इन उपायों पर सवाल खड़े किए हैं, जिनके बारे में भाजपा की राय है कि इन उपायों पर संसद के अंदर और बाहर विशिष्ट रूप से बहस कर किसी समाधान पर पहुंचना अत्यंत आवश्यक है। अर्थ-व्यवस्था तो पहले ही गहन 'एनीमिया' से गुजर रही है और इसमें तो जरा भी बुद्धिमानी नहीं होगी कि हम इसे और भी रक्तरंजित कर दें।

इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि यूपीए सरकार इस समय अनेकानेक विकास-विशेषज्ञों और स्टेक होल्डरों द्वारा अपना विरोध प्रगट करने के बाद भी यूरोपीय यूनियन (ईयू) के साथ अत्यंत विवादास्पद मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) पर बातचीत के अंतिम चरण में हैं। वैचारिक बातों के अलावा भी, ऐसी रिपोर्टें मिल रही है जिनके अनुसार यूपीए सरकार जिन शर्तों पर ईयू के साथ समझौता करने जा रही है, उनसे भारत के लोगों के हित गंभीर रूप से खतरे में पड़ जाएंगे और व्यापार अथवा आर्थिक विस्तार में कोई लाभ नहीं मिलेगा। अन्य देशों के बीच में ऐसे सैंकड़ों 'एफटीए' समझौते है और यदि मान लें, थोड़ा बहुत लाभ होता भी होगा तो भी, वह लाभ अन्य देशों के साथ वैसे ही देश के समझौतों के कारण बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो जाएंगे। जैसा कि UNCTAD (अकंटाड) का कहना है कि ''एफटीए के माध्यम से समृद्ध बाजारों तक पहुंच बनाने से विकासशील देशों को कोई गारंटी नहीं मिल जाती है, और यह भी हो सकता है कि यह लाभ थोड़े समय के लिए हों, परंतु इस 'पालिसी-स्पेस' से हानि तो निश्चित ही है। ''ईयू के साथ एफटीए पर वर्तमान बातचीत में भारत को निश्चय ही अपनी अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्रों में 'पालिसी-स्पेस' का नुकसान उठाना पड़ेगा।

वैचारिक बातों के अलावा भी, ऐसी रिपोर्टें मिल रही है जिनके अनुसार यूपीए सरकार जिन शर्तों पर ईयू के साथ समझौता करने जा रही है, उनसे भारत के लोगों के हित गंभीर रूप से खतरे में पड़ जाएंगे और व्यापार अथवा आर्थिक विस्तार में कोई लाभ नहीं मिलेगा। अन्य देशों के बीच में ऐसे सैंकड़ों 'एफटीए' समझौते है और यदि मान लें, थोड़ा बहुत लाभ होता भी होगा तो भी, वह लाभ अन्य देशों के साथ वैसे ही देश के समझौतों के कारण बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो जाएंगे।

'First Post' (फर्स्ट पोस्ट) में प्रकाशित रिपोर्टों के अनुसार, भारत को एफटीए से बहुत ही कम लाभ मिलेगा क्योंकि लगभग इसके कृषि निर्यात का 69 प्रतिशत और गैर-कृषि निर्यात का 65 प्रतिशत पहले ही बिना ड्यूटी के यूरोपीय बाजारों में चला जाता है, जबकि भारत कृषि उत्पादों का छह प्रतिशत से कम बिना ड्यूटी की अनुमति देता है। प्रस्तावित एफटीए में, भारत को 90 प्रतिशत टैरिफ हटाना पड़ेगा, परंतु ऐसा कोई आश्वासन नहीं है कि ईयू ऐसी सब्सिडी हटा लेगा जो भारतीय कृषि के लिए हानिकारक हैं। हां, एफटीए में सब्सिडीज के बारे में चर्चा का कोई प्रावधान नहीं है। अतः, अल्प एवं दीर्घकाल में यह भारत के किसानों और

कृषि-उद्योगों दोनों के लिए हानिप्रद रहेगा।

एक बार एफटीए लागू हो जाने पर, ईयू डेयरी, पोल्ट्री, चीनी, गेहूं, कंफेक्शनरी, तिलहन, प्लांटेशन उत्पाद और मछली-उत्पादों की भरमार कर देगा, जिनमें से कुछ तो भारत के लिए अत्यावश्यक हैं। इससे भारत की कृषि-संप्रभुता और इसकी खाद्य सुरक्षा के साथ सीधा-सीधा समझौता करना पड़ जाएगा। स्पष्ट है कि एफटीए में केवल टेरिफ पर बातचीत हो रही है, और सब्सिडीज एवं अन्य इंसेंटिव जैसी अन्य व्यापार के लिए हानिकारक बातों पर बात नहीं हो रही है जो हमारी कृषि के लिए हानिकारक हैं।

संयोगत: संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के यूनीवर्सल डिक्लेरेशन आफ ह्यूमेन राइट्स तथा इंटरनेशनल कोवेनेंट ऑन इकॉनॉमिक, सोशल एंड कल्चरल राइट्स (आईसीईएससीआर) के अंतर्गत खाद्य प्राप्त करना मानव-अधिकारों के अंतर्गत आता है।

एक और भी क्षेत्र है जो भारत पर प्रभाव डालेगा और वह है- केंद्र तथा राज्यसरकार संस्थाओं द्वारा खरीद का खोला जाना। यह भारत के अनेक उद्योगों तथा मध्यम एवं लघु उद्योगों की जीवन रेखा (लाइफलाइन) है, जिसमें महिलाओं तथा अपवंचित समुदायों द्वारा संचालित लघु व्यापार भी शामिल हैं।

जरा उस स्थिति पर सोचिए, जब हमारे छोटे ठेकेदारों को रेलवे या अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में अनुबंध के लिए ईयू के साथ मुकाबला करना होगा। भारत ने अभी तक यह सुविधा किसी भी अन्य एफटीए पार्टनर को नहीं दी है और ईयू को इसे दे देने से अन्य देशों की भी मांग बढ़ जाएगी। छोटे से देश भारत के ठेकेदारों का जापान, जर्मनी के उच्च तकनीकी वाले ठेकेदारों के साथ सरकारी अनुबंधों के लिए मुकाबला करना, किसी भी तरह से 'लेवल-प्लेइंग फील्ड' अर्थात् बराबरी के क्षेत्र जैसा नहीं लगता है। यह कोई एक्सक्लूसिव, टेक्नॉलॉजिकली मांग वाला क्षेत्र नहीं है बल्कि इसका सम्बंध साधारण अनुबंधों से जुड़ा है।

जरा उस स्थिति पर सोचिए, जब हमारे छोटे ठेकेदारों को रेलवे या अन्य सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में अनुबंध के लिए ईयू के साथ मुकाबला करना होगा। भारत ने अभी तक यह सुविधा किसी भी अन्य एफटीए पार्टनर को नहीं दी है और ईयू को इसे दे देने से अन्य देशों की भी मांग बढ़ जाएगी। छोटे से देश भारत के ठेकेदारों का जापान, जर्मनी के उच्च तकनीकी वाले ठेकेदारों के साथ सरकारी अनुबंधों के लिए मुकाबला करना, किसी भी तरह से 'लेवल-प्लेइंग फील्ड' अर्थात् बराबरी के क्षेत्र जैसा नहीं लगता है।

भारत पहले ही ईयू के साथ 2000-01 से अब तक लगातार व्यापार घाटे में चल रहा है जो 2008-09 में 3309.3 मिलियन अमरीकी डालर का बनता है। प्रोजेक्शन (सीईपीआईआई-सीआईआरईएम) बताता है कि एफटीए के बाद तो औद्योगिक क्षेत्रों में भी, भारत को केवल टेक्सटाइल और वस्त्र, तथा चमड़े के क्षेत्र में ही लाभ पहुंचेगा। भारत के लिए मूल्य के रूप में केवल जो परिवर्तन दिखाई पड़ता है, वह उद्योग में टेक्सटाइल (3573 मिलियन यूएसडी) तथा मैनुफैक्चरिंग क्षेत्र में (807 मिलियन यूएसडी) का दिखाई पड़ता है। बल्कि, मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र में भी ईयू मे भारत का मार्केट शेयर अपरिवर्तनीय ही रहेगा। इसके अलवा, टेक्सटाइल क्षेत्र में ईयू एनटीबी भारत के लिए एक समस्या बन जाएगी। किंतु, ईयू का द्विपक्षीय व्यापार उद्योग और मैनुफैक्चरिंग क्षेत्र, प्राइमरी प्रोडक्ट, वाहन, टेक्सटाइल, चमड़ा और वस्त्र, और कृषि खाद्य में प्रमुख रूप से बढ़ जाएगा। वास्तव में, उद्योग और मैनुफैक्चरिंग क्षेत्र में ही ईयू का लाभ (7947 मिलियन यूएसडी) अकेले ही भारत को टैक्सटाइल, वस्त्र और चमड़े से मिलने वाले लाभ से दुगुना हो जाएगा।

एसएसएमई का कहना है कि यदि जिन शर्तों की बात कही जा रही है, वे 'लेवल-प्लेइंग फील्ड' वाली नहीं है, जिनसे विकसित देशों के साथ मुकाबला किया जा सकता हो। क्योंकि मार्केटिंग, स्टोरेज और ट्रासंपोर्टेशन जैसे क्षेत्रों में भारत का इंफ्रास्ट्रक्चर कमजोर है, अत: उद्यमियों को विकसित देशों के प्रतिस्पर्धियों के साथ मुकाबला करना कठिन लगता है क्योंकि इनको इन क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं का अत्यधिक लाभ है। इसके अलावा विकसित देशों को सरकार काफी ज्यादा मदद मिलती है। यूके सरकार ने अभी अपने एसएमई की मदद का एक नया दस्तावेज जारी किया है। भारत में, ऐसी कुछ नीतियां है जिनसे एमएसएमई निर्यात और उत्पादन को प्रोत्साहन की बात माना जाता है, परंतु लगभग सभी उद्यमियों का मानना है कि वे वास्तव में इन सुविधाओं का लाभ उठा नहीं पा रहे हैं।

एक और प्रमुख चिंता का विषय है: एफटीए में निवेश के प्रावधानों में न केवल निवेश के बाद संरक्षण का प्रावधान रखा गया है, बल्कि इसमें

स्थापना-पूर्व अधिकारों के प्रावधान भी हैं जिनमें 'मार्केट-एक्सेस' की प्रतिबद्धता भी शामिल है। एफटीए में इस प्रकार की प्रतिबद्धताओं से भारत की स्थिति जकड़ जाएगी और कुछ परिस्थितियों में कुछेक क्षेत्रों में विदेशी निवेश के पुनरीक्षण का अवसर भी हाथ से चला जाएगा। उदाहरण के लिए, भारत को आजकल इंडियन जेनरिक कंपनियों के जोरदार अधिग्रहण के कारण फार्मास्युटिकल एमएनसी से चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इससे सस्ते मूल्य पर भारत के लोगों को दवाईयां प्राप्त करने पर समझौता करना पड़ सकता है।

इस बारे में सर्वाधिक चर्चा हो रही है कि फार्मास्युटिकल क्षेत्र में एफडीआई पर रोक लगा दी जाए। इस प्रकार की प्रतिक्रिया को लागू करना तब तक संभव नहीं है जब तक भारत बिना किसी संरक्षण के विदेशी निवेश को कुछ क्षेत्रों में रोक न दे।

इस एफटीएम में जिस बौद्धिक सम्पदा अधिकारों का प्रस्ताव किया गया है, उसने तो ट्रिप्स (TRI Ps) समझौतों की हदें भी पार कर दी हैं जिससे यूरोपीय कंपनियों की पर्याप्त बाजार-शक्ति बढ़ जाएगी। इसके अलावा एफटीए के माध्यम से एफडीआई को उदार बनाने की मांग भी कर रहा है और इस प्रकार व्यापार और निवेश के बीच कड़ी स्थापित करने की बात की जा रही है, जिसका भारत ने 2003 में डब्ल्यूटीओ कानकून मिनिस्ट्रियल कांफ्रेंस में सफलतापूर्वक विरोध किया था। विकास विषमताओं के समाधान के लिए नीतियां बनाने के लिए भी सरकार के लिए अपनी मर्जी से काम करना कठिन हो जाएगा।

मीडिया में ऐसी कई रिपोर्टें आई हैं जिनसे पता चलता है कि ईयू भारत पर ऐसे कई संवेदनशील क्षेत्रों को उदार बनाने का दबाव बना रहा है जिस पर भारत प्रतिबद्ध नहीं होना चाहता है। ईयू रिटेल में भारत की प्रतिबद्धता चाहता है जिस क्षेत्र में लाखों-करोड़ों लघु व्यापार निर्भर करते हैं। ईयू भारत से बैंकिंग, बीमा, डाक सेवा और ऊर्जा जैसे संवेदनशील क्षेत्रों को भी निवेश के लिए खुलवाना चाहता है जो भारत नहीं कर सकता है।

भाजपा की मांग है कि -

सभी एफटीए का, और विशेष रूप से ईयू-भारत के बीच हुए सभी समझौतों पर बजट सत्र के दूसरे अधिवेशन के दौरान संसद में व्यापक बहस हो। एफटीए, विशेष रूप से ईयू-भारत के बीच हुई बातचीत का मूल पाठ एवं इसके निर्धारण अध्ययन के प्रभाव को तुरंत जारी किया जाए।

सरकार को बिना राजनीतिक सहमति के ईयू के साथ द्विपक्षीय व्यापार एवं निवेश समझौता (बीटीआईए) नहीं करना चाहिए और तुरंत ही सभी स्टेकहोल्डरों का सम्मेलन बुलाना चाहिए।

ईयू के साथ एफटीए को सामान्य रूप से भारतीय खुदरा बाजार और विशेष रूप से कृषि तथा डेयरी फार्मिंग को संकट में नहीं डालना चाहिए।

ऐसी सभी संधियां, जिनसे देश की संप्रभुता पर प्रभाव पड़ता हो और लोगों के मौलिक अधिकार प्रभावित होते हों, जिनमें देश की खाद्य-सुरक्षा और स्वास्थ्य, एवं देश का फेडरल स्ट्रक्चर (संघीय ढांचा) शामिल हैं, उन्हें संसद की संवीक्षा के बाद ही स्वीकृति मिलनी चाहिए। ■

(लेखक भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं लोकसभा के सांसद हैं)

आतंकवाद

स्लीपर सेल का काम है बेंगलूरू विस्फोट : राजनाथ सिंह

भाजपा ने बेंगलूरू में पार्टी कार्यालय के बाहर हुए बम विस्फोट को दुर्भाग्यपूर्ण करार देते हुए कहा कि यह आतंकी कार्रवाई किसी 'स्लीपर सेल' का काम है, जो आतंकवाद के खिलाफ लडाई में केन्द्र सरकार के प्रयासों की कमी का नतीजा है।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने सिंह ने नई दिल्ली में संवाददाताओं से कहा कि वह नहीं मानते कि किसी ने सरकार के जरिए ऐसा कराया है। आतंकी हरकत देश भर में हो रही है। यह जमीनी सच्चाई कि कई स्लीपर सेल हैं जो अलग अलग जगहों पर अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं।

श्री सिंह ने कहा कि घटना दुर्भाग्यपूर्ण है और दो लोग गंभीर रूप से जख्मी हैं।

गौरतलब है कि 17 अप्रैल को बेंगलूरू में भाजपा कार्यालय के बाहर विस्फोट में 11 पुलिसकर्मियों सहित 16 लोग घायल हो गये। बम एक मोटरसाइकिल में रखा गया था जो एक वैन और एक कार के बीच में खडी थी। बम सुबह साढे दस बजे फूटा। ■

कांग्रेस का वंशवादी अभिमान

बलबीर पुंज

भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआइआइ) के मंच से कांग्रेस के उपाध्यक्ष राहुल गांधी के श्रीमुख से निकली बातें क्या रेखांकित करती हैं? उनके संबोधन के बाद कांग्रेसियों के अचानक ऊर्जावान हो उठने की प्रेरणा क्या है? संगोष्ठी में भारतीय राजनीति और विकास पर अपना नजरिया रखते हुए राहुल गांधी ने गांवों को राजनीतिक ताकत देने और कमजोर व गरीब तबकों को साथ लेकर चलने का नारा लगाया। उन्होंने कहा कि विकास केवल सरकार नहीं कर सकती, इसके लिए सबको अपना योगदान देना चाहिए। केंद्र की राजनीति में गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी की आहट की घबराहट राहुल गांधी के बयान में स्पष्ट परिलक्षित हुई। उन्होंने मोदी का नाम लिए बगैर यह भी कटाक्ष किया कि 120 करोड़ लोगों की समस्याओं का समाधान 'घोड़े पर सवार' कोई एक मसीहा नहीं कर सकता।

वास्तव में राहुल गांधी का पूरा बयान कांग्रेस के पारंपरिक तकियाकलामों से भरा है। राहुल ने गरीब और वंचितों के उत्थान की बात की। उनकी दादी इंदिरा गांधी ने सन 1971 के चुनाव में 'गरीबी हटाओ, पिछड़ापन मिटाओ' का नारा लगाया था, जिसे उनके पुत्र राजीव गांधी भी दोहराते रहे। कई पंचवर्षीय योजनाओं में 'गरीबी हटाओ, पिछड़ापन मिटाओ' के लिए भारी-भरकम राशि खर्च की जाती रही, किंतु उसका परिणाम क्या है? आज राहुल 42 सालों के बाद उन्हीं नारों को दोहरा रहे हैं तो उसका सीधा अर्थ है कि कांग्रेस में गरीबी हटाने की या तो इच्छाशक्ति नहीं है या कांग्रेस गरीबी को शाश्वत बनाए रख उसका दोहन करना चाहती है। इसीलिए राहुल कभी किसी कलावती का जिक्र करते हैं तो कभी उत्तर प्रदेश में दलितों के घर पूड़ी-सब्जी चखने और रात गुजार सुर्खियां बटोरने का उपक्रम रचते हैं। अपने वर्तमान भाषण में भी उन्होंने आम आदमी से जुड़े होने के लिए उत्तर प्रदेश के किसी गिरीश नामक बेरोजगार युवक का उल्लेख किया। देश में पचास वर्षों से अधिक समय तक कांग्रेस का शासन रहा है। परिस्थितियां क्यों नहीं बदलीं? पिछले नौ साल से कांग्रेसनीत संप्रग सरकार का अबाधित राज है। देश को भय, भूख, बेरोजगारी से मुक्ति क्यों नहीं मिली? क्यों आज भ्रष्टाचार सत्ता के शीर्ष स्तर को भी अपने आगोश में ले चुका है?

> ***क्या यह सच नहीं कि वंशवादी अभिमान के कारण ही सन 2004 के खंडित जनादेश के बाद कांग्रेस ने प्रजातंत्र के साथ अभिनव प्रयोग कर केंद्रीय सत्ता को दो ध्रुवीय बनाकर सारे गड़बड़झाले की नींव डाली? आज जिसके पास प्रधानमंत्री का पद है उसके पास कोई शक्ति नहीं है और जिसके पास शक्ति है, उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है।***

यह कहने का क्या तुक है कि किसी एक व्यक्ति से विकास संभव नहीं है? प्रजातांत्रिक व्यवस्था में सरकार की सामूहिक जिम्मेदारी बनती है, किंतु उसका नेतृत्व तो किसी एक को ही करना होता है। क्या यह सत्य नहीं कि सीमित संसाधनों और मौजूदा बुनियादी ढांचों के दम पर ही कई भाजपानीत राज्य सरकारों ने विकास के प्रतिमान स्थापित किए हैं? क्या यह सच नहीं कि बिहार की राजग सरकार के कार्यकाल में राज्य का कायाकल्प हुआ है? किंतु राहुल पता नहीं किस दुनिया में खोए रहते हैं। संप्रग सरकार में देश जिस दुर्व्यवस्था की ओर अग्रसर हुआ है उन सामाजिक-आर्थिक विषयों पर राहुल खामोशी साध लेते हैं। क्यों? अभी देश में सत्ता के दो केंद्र होने और उसके सफल-असफल होने पर बहस चल रही है। कांग्रेस के महासचिव दिग्विजय सिंह ने ही पहली बार सार्वजनिक तौर पर यह स्वीकार किया कि सत्ता के दो केंद्रों का प्रयोग विफल हुआ है, किंतु इसके ठीक बाद कांग्रेस के प्रवक्ता जनार्दन द्विवेदी ने सत्ता के दो केंद्रों के अस्तित्व को भविष्य के लिए भी आदर्श बताया। राहुल को इस पर अपना नजरिया स्पष्ट करना चाहिए। क्या यह सच नहीं कि वंशवादी अभिमान के कारण ही सन 2004 के खंडित जनादेश के बाद कांग्रेस ने प्रजातंत्र के साथ अभिनव प्रयोग कर केंद्रीय सत्ता को दो ध्रुवीय बनाकर सारे गड़बड़झाले की नींव डाली? आज जिसके पास प्रधानमंत्री का पद है उसके पास कोई शक्ति नहीं है और जिसके पास शक्ति है, उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है।

एक व्यक्ति परिस्थितियां बदल सकता है, यदि उसके पास निर्णय लेने की शक्ति हो। यदि दृढ़ इच्छाशक्ति हो और उसे विवेक के आधार पर फैसले लेने की आजादी हो तो निश्चित तौर पर बदलाव लाया जा सकता है, किंतु वंशवादी दर्प में लोकतंत्र के साथ जो नया प्रयोग किया गया उसके कारण प्रधानमंत्री के पास निर्णय लेने का अधिकार नहीं है। संप्रग समन्वय समिति की अध्यक्ष होने के नाते निर्णय लेने का अधिकार सोनिया गांधी के हाथों में है। कांग्रेस अध्यक्ष के पास मंत्रिमंडल का कोई भी विभाग नहीं है, किंतु पूरा मंत्रिमंडल उनकी परिक्रमा लगाता है। यह अहंकार युवराज राहुल गांधी के भाषणों में भी झलकता है। केंद्र सरकार से राज्यों को भेजी जाने वाली केंद्रीय सहायता के लिए वह ऐसे जुमलों का प्रयोग करते हैं, मानो निजी मिल्कियत से खैरात दे रहे हों।

नीतियां और योजनाएं बनाने का काम सरकार का है, किंतु यह काम आज आउटसोर्स हो रहा है। सोनिया गांधी की निगरानी में गठित 'राष्ट्रीय सलाहकार समिति' सरकार का काम कर रही है, जिसका सारा ध्यान कांग्रेस के चुनावी नफा-नुकसान को देखते हुए लोकलुभावन नीतियां व योजनाएं बनाने पर केंद्रित होता है। मनरेगा, खाद्य सुरक्षा, मिड डे मील, काम के बदले अनाज और न जाने ऐसी कितनी योजनाएं हैं जिनसे कथित सामाजिक उत्थान का लक्ष्य तो पूरा नहीं हो रहा है, उल्टे सरकारी कोष पर बोझ बढ़ता जा रहा है।

राहुल गांधी प्रधानमंत्री पद को जब अपनी प्राथमिकता नहीं बताते हैं तो उसका सीधा-सा अर्थ है। इस बात में किसी को कोई भ्रांति नहीं है कि वर्तमान समीकरण में वह जब चाहें, प्रधानमंत्री बन सकते हैं, जिसके लिए कांग्रेसी लंबे समय से लालायित भी हैं। दूसरा यह भी एक बड़ा कारण है कि सत्ता की दो ध्रुवीय वर्तमान व्यवस्था में जब बिना किसी जवाबदेही के सत्ता का सारा आकर्षण उन्हें सुलभ है तो नीतिगत अपंगता और निर्णयहीनता से पैदा हुई विफलताओं का सेहरा अपने सिर क्यों बांधा जाए। 2014 में कांग्रेस की वापसी होगी या नहीं, यह अभी समय के गर्भ में है, किंतु यह जो वंशवादी अहंकार है वह नया नहीं है।

इंदिरा गांधी के जमाने में तो यह अहंकार और परवान चढ़ा। चाटुकारों की मंडली ने तो तब 'इंदिरा इज इंडिया एंड इंडिया इज इंदिरा' का नारा ही गढ़ दिया था। यह अतिशयोक्ति नहीं कि सत्तासीन होने पर कांग्रेस निरंकुश हो जाती है और वह चाहती है कि पूरे देश में केवल उसकी ही राजनीतिक विचारधारा का वर्चस्व रहे। आज राहुल गांधी के सीआइआइ भाषण से ऊर्जावान होने वाले कांग्रेसियों को इसी मानसिकता से प्रेरणा मिल रही है।

विजय लक्ष्मी पंडित की पुत्री नयनतारा सहगल ने इंदिरा गांधी के ऊपर लिखी अपनी पुस्तक में इस विकृति का खुलासा करते हुए लिखा है कि पंडित नेहरू के वंशज यह मानते हैं कि उनका जन्म राज करने के लिए हुआ है और कांग्रेस पार्टी उनकी खानदानी जागीर है। इंदिरा गांधी के जमाने में तो यह अहंकार और परवान चढ़ा। चाटुकारों की मंडली ने तो तब 'इंदिरा इज इंडिया एंड इंडिया इज इंदिरा' का नारा ही गढ़ दिया था। यह अतिशयोक्ति नहीं कि सत्तासीन होने पर कांग्रेस निरंकुश हो जाती है और वह चाहती है कि पूरे देश में केवल उसकी ही राजनीतिक विचारधारा का वर्चस्व रहे। आज राहुल गांधी के सीआइआइ भाषण से ऊर्जावान होने वाले कांग्रेसियों को इसी मानसिकता से प्रेरणा मिल रही है। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं राज्यसभा सदस्य हैं)

(साभार : दैनिक जागरण)

श्रद्धांजलि

वरिष्ठ भाजपा नेता कृष्ण कुमार गोयल का निधन

भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री कृष्ण कुमार गोयल (82) का 23 अप्रैल 2013 को निधन हो गया। वे देश की पहली गैरकांग्रेसी (जनता पार्टी) सरकार में मंत्री रहे थे। वे तीन बार सांसद और दो बार विधायक रहे। राजस्थान सरकार में भी मंत्री रहने सहित राज्य में भारतीय जनसंघ के प्रदेश अध्यक्ष रहे। भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री केके गोयल के निधन पर प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती वसुंधरा राजे ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उनके निधन से पार्टी को जो क्षति हुई है, उसकी भरपाई मुश्किल है। ■

संप्रग शासन में बढ़ती महंगाई

राजनाथ सिंह सूर्य

कांग्रेस ने 2009 के चुनावी घोषणा पत्र में वादा किया था कि सौ दिन में महंगाई कम हो जाएगी। सौ दिन बीतने पर उसने अगली तीन महीने महंगाई घटा देने का वादा किया। तीन-तीन महीने के कई वादों के दौरान महंगाई बेलगाम घोड़े की तरह छलांग ही लगाती गई तो देश के महान अर्थशास्त्री समझे जाने वाले प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस बारे में पूछे जाने पर झल्लाकर कहा था कि उनके पास कोई जादुई छड़ी नहीं है जिसे घुमाकर महंगाई कम कर दें।

फिर रट लगाई गई कि दुनिया भर में महंगाई बढ़ रही है तो आज के दौर में भारत उससे अछूता रह सकता है। इसी के साथ शुरू हुआ भ्रष्टाचार उजागर होने का दौर और खुदरा बाजार में सीधे विदेशी पूंजी निवेश का अभियान को भारत में लाने के लिए ''लाबीइंग'' पर एक कंपनी वालमार्ट ने सौ करोड़ रुपए खर्च करने का दावा किा।

देश की जनता में महंगाई और भ्रष्टाचार बढ़ते ही जाने से जो रोष और क्षोभ उत्पन्न हुआ था उस पर नमक छिड़कते हुए दूसरे अर्थ सरदार माने जाने वाले मोंटेक सिंह अहलुवालिया ने एक धमाका और किया कि शहरी क्षेत्र के एक परिवार बत्तीस रुपए प्रतिदिन पर गुजारा कर सकता है। और ग्रामीण परिवार 24 रुपए पर गुजारा कर सकता है।

ऐसा वक्तव्य देने वाले योजना आयोग के इन अध्यक्ष महोदय ने स्वयं की सुविधा के लिए क्या किया उसका खुलासा बहुत हो चुका है। अब एक और अर्थशास्त्री समझे जाने वाले रिजर्व बैंक के गवर्नर सुब्बाराव ने खुलासा किया है कि गरीब लोगों द्वारा उपभोक्ता वस्तुए विशेषकर खान-पान में अधिक व्यय करने के कारण महंगाई बढ़ी है।

इस प्रकार की अभिव्यक्ति करने वालों को अज्ञानी माना जाय जिसे बोलचाल की भाषा में अहमक कहा जाता है या सभी प्रकार की सुविधा संपन्नता प्राप्त लोगों की संवेदनहीनता, या फिर अपनी विलासितापूर्ण जिंदगी पर पदरा डालने का प्रयास, जो भी, लेकिन यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि देश की व्यवस्था संभालने वाले लोग जिस कुएं का पानी पी रहे हैं, उसमें मांग की मात्रा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

अपनी असफलता को छिपाने के लिए जिस तरह से खीझ पैदा करने वाली बेतुकी अभिव्यक्तियां आ रही है उससे अवाम के जनमानस और स्थिति का संज्ञान न लेने वाले कसम खा लिया है पद के अनुरूप दायित्व न निभाने का। देश में कुछ लोगों के निरंतर धनी होते जाने और अधिकांश लोगों की गरीबी और तंगहाली बढ़ते जाने का यही कारण समझ में आ रहा है।

कुपोषण की स्थिति के बारे में इन्हीं महानुभावों को सबसे पहले जानकारी मिलती है क्योंकि इन्हीं लोगों के आंकलन के आधार पर वह रिपोर्ट तैयार होती है। पिछले दिनों कुपोषण के संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र संघ की जो रिपोर्ट प्रकाशित हुई है उसमें भारत को मिले स्थान पर शायद रिजर्व बैंक के गवर्नर ने ध्यान न दिया हो पर फिर यह समझ लिया है कि किसी भी धरातलीय आंकलन से अधिक अवाम को प्रतिष्ठित स्थान पर बैठने वालों के कथनों पर अधिक विश्वास है।

अब वे दिन लद गए। क्योंकि जब यह विश्वास था तब महत्वपूर्ण लोगों की कथनी करनी में समरूपता होती है, पारदर्शिता थी जिसका जिक्र अब भूले से भी नहीं होता।

रिजर्व बैंक के गवर्नर की गरीब लोगों की आर्थिक क्षमता सरकारी आंकड़ों में भले ही बढ़ी हो, क्योंकि वह बजट में आवंटित धनराशि पर आधारित रहती है लेकिन बार-बार यह कहने के बावजूद कि दिल्ली से जो जो एक रुपया गांव के लिए भेजा जाता है उसका सोलह पैसा भी उन लोगों तक नहीं पहुंचता जिनके लिए भेजा जाता है, गरीबों की आर्थिक क्षमता को रिजर्व बैंक के गवर्नर

कांग्रेस ने 2009 के चुनावी घोषणा पत्र में वादा किया था कि सौ दिन में महंगाई कम हो जाएगी। सौ दिन बीतने पर उसने अगली तीन महीने महंगाई घटा देने का वादा किया। तीन-तीन महीने के कई वादों के दौरान महंगाई बेलगाम घोड़े की तरह छलांग ही लगाती गई तो देश के महान अर्थशास्त्री समझे जाने वाले प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस बारे में पूछे जाने पर झल्लाकर कहा था कि उनके पास कोई जादुई छड़ी नहीं है जिसे घुमाकर महंगाई कम कर दें।

के आंकलन को जले पर नमक छिड़कने का भी अभाव हो गया है। जिस नमक को आम आदमी का हक साबित करने के लिए महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह किया था, वह तो बड़ी कंपनियों के हाथ में चला गया है और उसके भी दाम उतने ही ऊंचे होते जा रहे हैं जितने किसी अन्य खाद्य पदार्थ के। कहावत है नमक से नमक नहीं खाया जाता लेकिन यहां तो पसीने के रूप में शरीर का सारा नमक बहा देने वालों के साथ माखौल किया जा रहा है।

क्या ''कांग्रेस का हाथ गरीबों के साथ'' यही सम्यक अर्थ है। इंदिरा गांधी ने जब गरीबी हटाओ का नारा दिया था तब एक कवि ने लिखा था ''कि जब न रहेगा गरीब तो कैसे रहेगी गरीबी''। सोनिया गांधी के इशारे पर चलने वाले वाले राजनीतिक और प्रशासनतंत्र के कलपुर्जे अब इस बारे का वही अर्थ समझ पाए हैं इसीलिए वे दावा कर रहे हैं कि गरीब लोग आजकल फल सब्जी और पौष्टिक ज्यादा खाने लगे हैं इसलिए महंगाई बढ़ रही है। जाके पांव न फटे बेवाई सो का जाने पीर पराई। सोनिया गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष के पद पर बने रहने के जिस प्रकार सारे रिकार्ड तोड़ दिए हैं वैसे ही महंगाई बढ़ने के नए-नए कीर्तिमान स्थापित होते जा रहे हैं पिछले नौ महीने में भ्रष्टाचार ने भी नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। महंगाई और भ्रष्टाचार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसे कौन बढ़ावा दे रहा है। मनमोहन सिंह नौ वर्ष से प्रधानमंत्री हैं पिछले चार वर्ष में महंगाई भ्रष्टाचार सिक्का जमाये बैठे हैं और खोटा सिक्का बाजार में पहले चलता है, की कहावत के अनुसार शासन की नीतियां निर्धारित हो गई हैं।

कांग्रेसियों का तो मुंह बंद है क्योंकि वे एक परिवार के प्रति वफादारी में ही अपना अस्तित्व समझते हैं लेकिन उनके

कांग्रेस का आज रवैय्या नया नहीं है। समस्याओं से निपटने के बजाय लोगों का ध्यान दूसरी ओर मोड़ दो। इसलिए उसका अभियान फिर सांप्रदायिकता बनाम सेक्युलरिज्म हो गया है और जिन्हें वह सांप्रदायिक कहती है उनका एजेंडा विकास का। और जिनका एजेंडा विकास का है और जिन्होंने उसे कर दिखाया है उन्हें ''मौत का सौदागर'' कहने का परिणाम भुगतने के बावजूद अब भैंस पर सवार यमराज को वही देख पाता है जिसका अंत होने वाला होता है।

जिस साझीदारों और समर्थकों के सहारे सरकार पर सोनिया गांधी काबिज हैं तो नरेगा, मनरेगा और खाद्यान्न सुरक्षा योजना की राशि जो कई लाख करोड़ रुपए होती है उसकी लूट का हवाला देते हुए उसे बंद करने की आवाज उठा रहे हैं। वे आवाज भर ही उठ रहे हैं इसीलिए संचार मंत्री कपिल सिब्बल को यह कहने का साहस हुआ है कि जिसे साथ रहना है रहे जिसे जाना हो चला जाय लेकिन हमारी सरकार पांच साल का कार्यकाल पूरा करेगी।

कांग्रेस ने अपनी भावी नेता के रूप में जिन राहुल गांधी को उपाध्यक्ष बनाकर मैदान में उतारा है वह किस प्रकार जगहंसाई कर रहे हैं, इसके विस्तार में जाने की जरूरत नहीं। उनके एक सलाहकार बने दिग्विजय सिंह यह कह रहे हैं कि सत्ता के दो केंद्र व्यवस्था नहीं होनी चाहिए, जनार्दन द्विवेदी 'आधिकारिक' रूप से कह रहे हैं कि कांग्रेस अध्यक्ष और प्रधानमंत्री अलग-अलग व्यक्ति होने का हमारा प्रयोग फलदायी साबित हो रहा है। कहने को सत्ता के दो केंद्र भले ही हो लेकिन संचालन का तो एक ही केंद्र है। जो अनुभवहीन और असंवेदनशील है।

कांग्रेस का आज रवैय्या नया नहीं है। समस्याओं से निपटने के बजाय लोगों का ध्यान दूसरी ओर मोड़ दो। इसलिए उसका अभियान फिर सांप्रदायिकता बनाम सेक्युलरिज्म हो गया है और जिन्हें वह सांप्रदायिक कहती है उनका एजेंडा विकास का। और जिनका एजेंडा विकास का है और जिन्होंने उसे कर दिखाया है उन्हें ''मौत का सौदागर'' कहने का परिणाम भुगतने के बावजूद अब भैंस पर सवार यमराज को वही देख पाता है जिसका अंत होने वाला होता है। ■

(पायनियर से साभार)

देवेन्द्र फडणवीस महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बने

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने 11 अप्रैल 2013 को श्री देवेन्द्र गंगाधर फडणवीस को महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा का अध्यक्ष नियुक्त किया। श्री फडणवीस नागपुर म्युनिसिपल कॉरपोरेशन के मेयर रह चुके हैं। आप 1999 से नागपुर विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं।

भ्रष्टाचार करेगा कांग्रेस का सत्यानाश : राजनाथ सिंह

पग-पग पर हो रहा श्रीमती राजे का अभूतपूर्व स्वागत

भाजपा राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती वसुंधरा राजे के नेतृत्व में 4 अप्रैल 2013 से सुराज संकल्प यात्रा निकाली जा रही है। कुल 77 दिन की यह यात्रा 21 जुलाई को जयपुर में समाप्त होगी। यात्रा के दौरान जबर्दस्त जन-प्रतिसाद मिल रहा है। यात्रा मार्ग में पग-पग पर स्वागत द्वार लगे होते हैं और झंडे, बैनरों एवं होर्डिंग से सजे होते हैं। भरी दुपहरी में सड़क के किनारे व डिवाइडर पर हाथों में फूलमालाएं लेकर खड़े कार्यकर्ताओं में अपनी नेता के स्वागत की आतुरता देखने लायक होती है। कहीं माला पहनाने की होड़ तो कहीं बात करने की बेसब्री। पटाखों का रह-रहकर गूंजता शोर। रथ के आगे तेज चलते भाजपा नेता और साथ में जोश से नारे लगाते व आतिशबाजी करते कार्यकर्ताओं का उत्साह देखते ही बनता है। यात्रा के दौरान आयोजित जनसभाओं में श्रीमती वसुंधरा राजे लोगों को विश्वास दिलाती हैं और साथ ही सवाल भी करती हैं कि कांग्रेस ने केवल वादे किए जबकि भाजपा राज आने पर सभी के प्रयासों से विकास होगा। उन्होंने कहा कि जब छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश एवं गुजरात में बदलाव हो चुका है तो राजस्थान में क्यों नहीं हो सकता?

भाजपा राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती वसुन्धरा राजे ने 4 अप्रैल 2013 को राजसमंद स्थित चारभुजाजी मंदिर से अपनी सुराज संकल्प यात्रा की शुरुआत की। उमड़े जनसैलाब के बीच राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह और श्रीमती वसुन्धरा राजे ने जनता से प्रदेश में कांग्रेस की सरकार को उखाड़ फेंकने और भाजपा को सत्ता में लाने की अपील की। जयपुर स्थित सांगानेर हवाई अड्डे से श्री राजनाथ सिंह की अगुवाई में हैलिकॉप्टर से वसुन्धरा राजे दोपहर साढ़े बारह बजे चारभुजाजी मंदिर आईं। मंदिर में पूजा अर्चना के बाद उमड़े जनसैलाब के बीच दोनों नेता पहुंचे। मंच पर मौजूद सभी धर्मों के संतों से आशीर्वाद लेने के बाद श्रीमती राजे ने जनता

से प्रदेश कांग्रेस सरकार को कुशासित करार देते हुए जनता से इसे उखाड़ फेंकने और भाजपा को फिर से सत्तासीन करने का आह्वान किया। श्री राजनाथ सिंह ने केन्द्र सरकार को आड़े हाथों लिया। प्रदेश में भाजपा को वोट देने की अपील की। श्री राजनाथ सिंह ने श्रीमती राजे को प्रदेश में सत्ता परिवर्तन की शुभकामना देते हुए विशेष रुप से तैयार रथ से प्रदेश की यात्रा के लिए रवाना किया। श्रीमती वसुन्धरा ने रथ पर सवार होने के बाद उसकी छत से जन समूह से चुनावों में भाजपा का साथ देने की अपील की। उन्होंने देवगढ़ तक यात्रा की। रास्ते भर उनका जोरदार स्वागत हुआ। देवगढ़ में सभा भी आयोजित

राजस्थान को वसुंधरा राजे के नेतृत्व की जरूरत : नितिन गडकरी

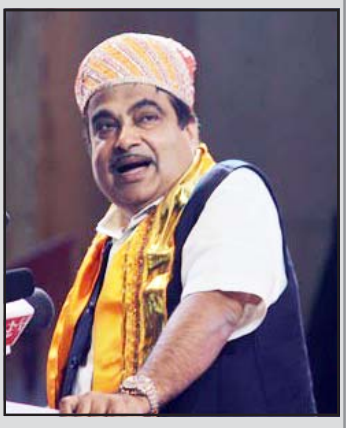

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती वसुंधरा राजे की सुराज संकल्प यात्रा का पहला चरण 16 अप्रैल को उदयपुर शहर में एक बड़ी सभा के साथ सम्पन्न हो गया। भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने जहां यूपीए सरकार व प्रधानमंत्री पर जमकर कटाक्ष किए, वहीं श्रीमती राजे ने मध्य प्रदेश, गुजरात के विकास की तस्वीर दिखाते हुए राजस्थान में भाजपा की सरकार बनाने की वकालत की।

मेवाड़ संभाग में 13 दिन से चल रही सुराज संकल्प यात्रा के समापन पर महाराणा भूपाल स्टेडियम में हुई सभा में श्री नितिन गडकरी ने कहा कि भाजपा ने मध्यप्रदेश, गुजरात जैसे राज्यों में सुशासन देकर अपनी कुशलता का लोहा मनवा दिया है। उन्होंने राजस्थान में सरकार बदलने का आह्वान करते हुए कहा कि इस प्रदेश को वसुंधरा राजे के नेतृत्व की जरूरत है। वहीं सभा में श्रीमती वसुंधरा राजे ने विकास के मुद्दे पर भाजपा को वोट देने की अपील की। उन्होंने कहा कि प्रदेश के किसानों की स्थिति आंध्र और महाराष्ट्र के किसानों जैसी हो गई है, किसानों की आत्महत्या के प्रकरण बढ़ रहे हैं। सभा में नेता प्रतिपक्ष श्री गुलाब चंद कटारिया ने कहा कि मेवाड़ से ही सरकारें बनती और बिगड़ती है। सभा को भाजपा नेता श्री अरूण चतुर्वेदी ने भी सम्बोधित किया।

की गई। यात्रा की शुरूआत के अवसर पर चारभुजाजी में भाजपा के प्रदेश प्रभारी कप्तान सिंह सोलंकी, नेता प्रतिपक्ष गुलाब कोठारी सहित प्रदेश भर सभी वरिष्ठ नेता, कार्यकर्ता मौजूद थे।

जनसमूह को संबोधित करने हुए श्रीमती वसुन्धरा राजे सरकार पर जमकर बरसी। उन्होंने कहा कि हम सब लोग यहां प्रदेश में सुराज लाने को एकत्रित हुए हैं। भाजपा, नया राजस्थान का संकल्प लेकर यहां से आगे बढ़ेगी। कांग्रेस की संदेश यात्रा निकाल रही ही जिसमें नया और विकसित राजस्थान होने का नारा दिया जा रहा है, लेकिन मैं पूछना चाहती हूं कि साढ़े चार साल कांग्रेस सरकार क्या कर रही थी, अब जनता जब उनके कुशासन से मुक्ति चाहती हैं तो अंतिम छह माह में उन्हें भ्रमित किया जा रहा है। अफवाहें और षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। इस सरकार में खुश हैं तो केवल सरकार। जनता परेशान है। अब फिर से मुझ पर आरोप लगाना शुरू कर दिया है। पहले भी बदनाम करने का षड्यंत्र किया गया। आयोग बिठा दिए। लेकिन कुछ हाथ नहीं लगा। इनकी साजिश फेल हो गई। लेकिन जनता ने मुझे चुनरी ओढ़ाई है, जिसकी लाज मैंने रखी। ये आरोप लगाते हैं कि मैं राजस्थान से गायब रहती हूं, लेकिन जनता को पता है कि मैं उनके साथ ही हूं। अब ये लोग यात्रा निकालकर मेरे लिए असभ्य भाषा का प्रयोग कर रहे है, लेकिन मैं इन्हें उसका जवाब नहीं दूंगी। प्रदेश की जनता इन्हें जवाब देगी। प्रदेश को साढ़े चार साल में इन्होंने बीमारु बना दिया। हमारी सरकार के कामों को खुद का बताकर केवल फीते काटे। केन्द्र में कांग्रेस और प्रदेश में कांग्रेस की सरकार है। चुनावों में कड़ी से कड़ी जोड़ने के नाम पर जनता से वोट मांगे,जनता ने विश्वास जताया तो उनके साथ विश्वासघात कर दिया। केन्द्र से अब तक कोई विशेष राहत पैकेज नहीं ला सके। प्रदेश में निवेशक आए नहीं, प्रवासी राजस्थानी आए तो उन्होंने मुंह पर कहा कि प्रदेश में हालात खराब हैं। हमने रिसर्जेंट राजस्थान कर लाखों करोड़ का प्रदेश में निवेश कराया, लेकिन उन निवेशकों को भी यहां से भागना पड़ रहा है। बिजली पैदा की नहीं, लोगों को आपूर्ति नहीं हुई और दाम बढ़ा दिए। हमने जनता को चौबीस घंटे बिजली दी। कांग्रेस की सरकार क्या बनी पांच दिन बाद ही प्रदेश में बिजली संकट हो गया। दस लाख लोगों को रोजगार दिया। इन्होंने युवाओं को सड़क पर ला दिया। महिलाओं का प्रदेश में जीना दूभर है। छोटी-छोटी बच्चियों के बलात्कार हो रहे हैं। सरकार को तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए। महिलाओं की हमने भामाशाह योजना शुरू की थी, लेकिन उसे बंद कर दिया गया। केन्द्र सरकार ने अब इसे अपनाया है। मेरा वायदा है कि फिर से सरकार में आए तो महिला सशक्तिकरण में इसे फिर से शुरू करेंगे। महंगाई से जनता त्रस्त है और सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी है। किसान को न फसल का मुआवजा मिल रहा है न खाद। बीज मिल रहे हैं तो नकली। चिकित्सा, शिक्षा, सड़क, आधारभूत ढांचा चरमराया हुआ है। बच्चों को गरम खाना हमने देना शुरू किया था, इस सरकार में उस खाने

में अब रोटी के साथ मरे हुए चूहे बच्चों को परोसे जा रहे हैं।

जातियों से जातियों को लड़ाने का काम जरूर इन्होंने किया। गुर्जरों सहित एसबीसी जातियों को हमने आरक्षण दिया। संवैधानिकता के लिए इसे नवीं अनुसूची में शामिल कराने के लिए विधानसभा में संकल्प पारित कराया, राज्यपाल ने भी उसे अनुमति दी। लेकिन केन्द्र में अपनी सरकार से इसे अनुसूची में शामिल कराने की जहमत तक इन्होंने नहीं उठाई। कांग्रेस में लोग पैसा कमाने के लिए शामिल होते हैं। इनके पास बहुत पैसा है, ये चुनावों में आएंगे और पैसा बांटकर जनता को लुभाने का प्रयास करेंगे। हमारे पास पैसा नहीं, लेकिन जनता का प्यार है। हम सब वर्गों का विकास चाहते हैं। नया और विकसित राजस्थान, खुशहाल और समृद्धि भरा प्रदेश चाहते हैं। इसके लिए प्रदेश की कांग्रेस सरकार को उखाड़ फेंकना होगा। इसके लिए जरुरत पड़ी तो हम अपना खून-पसीना बहाएंगे। इसके लिए हमें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। उन्होंने कार्यकर्ताओं और जनता को हाथ उठाकर भाजपा का राज लाने के लिए संकल्प कराते हुए चुनावों तक जुटने और भाजपा को जिताने का आह्वान किया।

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि कई लोग कह रहे हैं कि वसुन्धरा को नेता के रुप में क्यों प्रोजेक्ट किया? क्योंकि मैंने और भाजपा ने वसुंधरा सरकार के पांच साल देखे हैं। जनता उन्हें फिर चाहती है। प्रदेश में हुए उनके काम की तुलना जनता खुद वर्तमान कांग्रेस सरकार से कर रही है और उन्हें फिर से याद कर रही है। उनकी नीतियां जनता हितैषी रहीं। राजस्थान बिजली में आत्मनिर्भर बना। अब राजधानी तक में बिजली नहीं। तब प्रदेश में 24 हजार किलोमीटर की सड़कें बनी। इन्होंने केवल 5 हजार किमी की सड़क बनाई। हिन्दुस्तान में अब तक भाजपा ने ही राज्यों में अच्छी हुकूमत दी है। मैं नहीं राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय एजेंसियां यह कह रही हैं।

श्री राजनाथ सिंह ने केन्द्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि जिस तरह राम ने रावण, कृष्ण ने कंस और ओबामा ने लादेन का वध किया था, उसी तरह देश में व्याप्त भ्रष्टाचार केन्द्र की यूपीए सरकार और कांग्रेस का वध करेगा। केन्द्रीय मंत्रियों पर दर्जनों भ्रष्टाचारों का खुलासा हुआ। मंत्री जेल तक गए। हमारी सरकार छह साल रही, लेकिन कोई अंगुली तक नहीं उठी। अटल सरकार को जनता आज भी याद करती है। दुनिया की बड़ी शक्तियों की चेतावनी के बाद भी भारत ने परमाणु परीक्षण किए। अन्तरराष्ट्रीय शक्ति बनाया। महंगाई को बांधे रखा, बढ़ने नहीं दिया। लेकिन देश में जब-जब कांग्रेस की सरकार आई, महंगाई साथ लाई। न कोई आर्थिक नीति है और न ही नियोजन। केन्द्र सरकार अल्पमत में है। कभी भी जा सकती है। अभी तक इस सरकार को केवल सीबीआई और एनआईए जैसी संस्थाओं ने बचाकर रखा हुआ है। अपनी सरकार को बचाने के लिए कांग्रेस ने जमकर सरकारी मशीनरी का दुरूपयोग किया है रिटायर्ड सीबीआई व एनआईए के अधिकारियों को अब बड़ा पद देकर इतिहास को कलंकित करने का प्रयास हो रहा है। ऐसी सरकार को सत्ता में रहने का कोई अधिकार नहीं है।

अब चुनाव मनमोहन और सोनिया के नेतृत्व में लड़ने की बात की जा रही है। लेकिन यह शर्मनाक है कि प्रधानमंत्री उनकी सरकार का होने के बावजूद उनका पीएम का उम्मीदवार तय नहीं है। दो नावों पर सवार होने का परिणाम क्या होता है, यह जनता भंलीभांति जानती है।■

श्रद्धांजलि

नहीं रहे जस्टिस जे.एस वर्मा

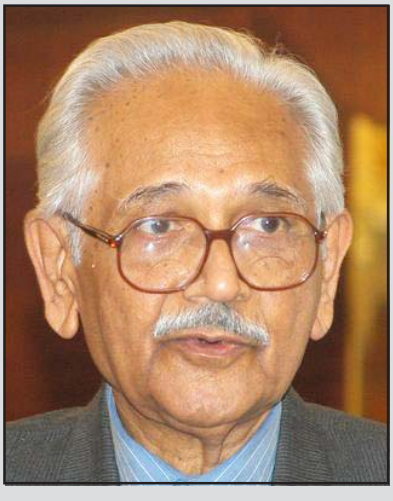

सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व प्रधान न्यायाधीश श्री जे.एस. वर्मा का 22 अप्रैल 2013 को निधन हो गया। श्री वर्मा का निधन गुड़गांव स्थित मेदांता अस्पताल में हुआ। वह 80 साल के थे। श्री वर्मा ने उस पैनल की अध्यक्षता की थी, जिसने 16 दिसम्बर को दिल्ली में हुए सामूहिक दुष्कर्म कांड के बाद बलात्कार निरोधी नियमों में बदलाव का सुझाव दिया था। वे भारत के 27वें मुख्य न्यायाधीश थे। उनका कार्यकाल 25 मार्च, 1997 से लेकर 18 जनवरी, 1998 तक रहा था। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने न्यायाधीश वर्मा के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। ■

भाजपा के शासनकाल की उपलब्धियां बनेंगी आम चुनावों में कांग्रेस के लिए कड़ी टक्कर : धूमल

हिमाचल भाजपा कार्यसमिति की दो दिवसीय बैठक का आयोजन कुल्लु में हुआ और हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने आरंभ में ही अपने भाषण में भाजपा सरकार के सत्ता में रहते हुए अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाई।

बैठक को संबोधित करते हुए प्रो. धूमल ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि ''भाजपा सरकार ने अपने शासन के साढ़े चार वर्षों के दौरान सभी वर्गों के लोगों के लाभ की खातिर अनेकानेक कल्याण योजनाएं कार्यावित कीं। सरकार ने न केवल पार्टी के घोषणापत्र पर अमल किया, जिसे हमने अपना नीति-दस्तावेज माना था, बल्कि इससे भी ऊपर उठकर लोगों को लाभान्वित किया। उन्होंने बैठक को संबोधित करते हुए आगे कहा कि ''सरकार के असाधारण कार्यों को देखकर राजग को विख्यात राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय एवं अन्य एजेंसियों ने 67 एवार्ड प्रदान किए थे, जिनमें स्वयं भारत सरकार भी शामिल है।

प्रो. धूमल का कहना है कि हमने 353 करोड़ रुपए की पं. दीनदयाल किसान बागबान समृद्धि योजना और 300 करोड़ रुपए की दूध गंगा योजना की शुरूआत की थी, जिसमें 25 से 80 प्रतिशत की सब्सिडी निहित थी तथा इनके कार्यान्वयन ने किसानों तथा पशुपालकों को लाभ पहुंचा था। 2007-2008 में प्रति व्यक्ति आय भी बढ़कर 43,900 रुपए तक पहुंच गई जबकि सकल घरेलु उत्पाद (जीडीपी) भी 33,000 करोड़ रुपए से बढ़कर

63000 करोड़ रुपए तक जा पहुंची। प्रो. धूमल ने कहा कि भाजपा सरकार ने पंचायती राज संस्थानों और नगरीय स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए 50 प्रतिशत का आरक्षण किया ताकि योजनाओं के निर्माण में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके।

कार्यसमिति की बैठक में भाजपा ने दो राजनैतिक प्रस्ताव पारित किए जिनमें से एक यूपीए के कुप्रशासन तथा भ्रष्टाचार से संबंधित था तो दूसरा प्रस्ताव राज्य में कांग्रेसी सरकार की कार्यप्रणाली के विरुद्ध था। इस बैठक में लगभग सभी वरिष्ठ नेता और पार्टी कार्यसमिति के सदस्य एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

बैठक के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए प्रो. धूमल ने आरोप लगाया कि कांग्रेस विधानसभा में कुछ बात करती है तो जनसभाओं में कुछ दूसरी बात का बखान करती है। उनका कहना था कि राजस्व मंत्री ने सदन में तो कहा था कि 7,132.11 बीघा जमीन सरकारी इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए दी, जो प्राइवेट विश्वविद्यालयों के लिए नहीं है, जिससे धारा 118 का उल्लंघन होता है, परंतु सच यह है कि कांग्रेस-सदस्य लोगों को गुमराह कर रहे हैं। प्रो. धूमल का यह भी आरोप था कि कांग्रेस ने एक गांव को बर्फ पर फिसलने के लिए, जो 'स्की' खेल के नाम से जाना जाता है, 3000 बीघा जमीन का आबंटन किया ताकि वहां 700 कमरे बनाए जा सकें, परंतु इसके लिए फोर्ड कंपनी से धारा 118 के अंतर्गत आवश्यक अनुमति नहीं ली गई। उनका यह भी कहना था कि सरकार ने रक्षा मंत्रालय से भी अनुमति प्राप्त नहीं की और 300 विदेशियों के लिए वहां 300 'हट्स' बनाई जाएंगी। उन्होंने कहा कि 'स्की' विलेज में उपर्युक्त निर्माण से 7000 एकड़ भूमि प्रभावित होगी और कृत्रिम बर्फ निर्माण करने से 28 मैगावाट बिजली खर्च हो जाएगी। प्रो. धूमल ने यह भी बताया कि कांग्रेस सरकार ने बीबीएमबी से हिमाचल प्रदेश के हिस्से में आने वाला 4000 करोड़ रुपए और चंडीगढ़ से 7.19 प्रतिशत का हिस्सा प्राप्त करने में असफल रही है। उनका आरोप था कि राज्य सरकार ने बीबीएमबी से 1500 करोड़ रुपए लेकर मामला समाप्त कर दिया है। पूर्व मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि आगामी आम चुनावों में भाजपा कांग्रेस के लिए कड़ी टक्कर देगी। प्रो. धूमल ने यह भी कहा कि यूपीए सरकार घोटालों में बुरी तरह फंसी पड़ी है। बैठक में उनके साथ प्रदेशाध्यक्ष श्री सतपाल सत्ती और प्रदेश कार्यसमिति के पदाधिकारीगण साथ में थे। ■